करताहूं. किसके अर्थ प्रश्नकी जो विद्या है ताको संसारके विषे जो लोक हैं तिन्हैं शीघ्रहीसे प्राप्त होय तिनके अर्थ. कैसे हैं वे पृथु कि निर्मल है यश जिनका, और भूतविद्याके सूर्य्य हैं गुण जिनके ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासोस्तमयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यंग्रहैःप्रश्नविलग्नकालाद्गृहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासी ॥ २ ॥

टीका–(च्युतिर्विलग्नात्–) प्रथम लग्न जो है ताते इतनी बात कहनी चाहिये; ग्रामका चलना, मेघकी वर्षा, बंदिमोक्ष अर्थात् कैदसे छूटना इतनी वस्तु लग्नसे देखनीं चाहिये. जो चर लग्न होय अथवा चरराशि होय तो पराये ग्रामसे चलै. मेघकी वर्षा पूछे तो मेघकी वर्षा होय और बंदी मोक्षकीपूछे तो बंदी बंधनसे छूटे और जो स्थिर राशि होय तो पहिले कार्य्य न होंय संपूर्ण कार्य्य स्थिर अर्थात् देरसे होंय ॥ (हिबुकाच्चवृद्धिः) हिबुक कहिये चौथे स्थानमें इतनी बातोंकी वृद्धि

होतेहै संतानादिककी वृद्धी, घोडा, बैल, अन्न, वस्त्र, विवाह आदि और जो संपूर्ण प्रश्नोंका विचार चतुर्थभवनसे समझलेना चाहिये कि चर लग्नहै वा चरके नवमांशमें होय तो वृद्धि कहिनी और स्थिर होय तो देरसे कहिये ॥ (मध्यात्प्रवासः) मध्यनाम दशम स्थानका है जो कोई परदेशीका प्रश्न करै कि कब आवैगा तो शीघ्र आवे चरसे और चरांशसे; और स्थिरसे देरसे आवै. चर और चरांशसे राजाकी फौजमें गया होय पूछै कब आवैगा तो चरसे और चरांशसे शीघ्रही आवे, और स्थिर राशिसे और स्थिरांशसे देरमें कहो और जिस राशिका स्वामी होय इतनेही दिनमें आवना कहो आवैगा और जो निकट दस कोसपर होय तो जितने दिनमें चंद्रमा केन्द्रमेंआवे तितनेही देरमें आवे चंद्रमासरिस प्रवासी घरमें आवै ॥ अब सप्तमस्थानसे विचार कहते हैं इतनी वस्तु सप्तमस्थानसे विचार करना योग्यहै. ग्रामसे चलना, रोगी मरेगा कि नहीं, कष्ट दूर होगा

नहीं, गई वस्तु मिलेगी कि नहीं, ये सब बातें सप्तमस्थानसे विचारनी चाहिये और जो स्थिरराशि होय तौ निवृत्ति और जो चर होय तौ प्रवृत्ति कहना और जो लग्नका स्वामी देखता होय तौ कार्य होगा. प्रश्नलग्नसे १० में ३ तीसरे ५ विश्वे, ९ वें ५ वें १० विश्वे, ० अथवा ४ वा ८ विश्वे १५ और ७ वें विश्वे २० कार्य होयगा ॥ और तनुस्थानसे तनुकी ॥ धनस्थानसे धनकी ॥ सहजस्थानसे भाई बहिनका ॥ मित्रस्थानसे घोडा, खेती, चतुर्थस्थानसे ॥ बेटाबेटी, गर्भ, विद्या, सुतस्थानसे ॥ वैरी, गाय, बैल, भैंस, रिपुस्थानसे ॥ स्त्री, वनिज, झगडा, विवाह सप्तमस्थानसे ॥ बावडी, कूआ, तलाव अष्टमस्थानसे ॥ धर्म करना नवमस्थानसे ॥ राज्य, क्रिया, पिताका प्रश्न दशमस्थानसे ॥ व्याज, द्रव्यलाभ, पांडित्य,वाद, विवाद ये एकादशस्थानसे अर्थात् एकादश भवनसे ॥ विवाह, कर्कशकर्म, व्यय अर्थात् खर्च ये संपूर्ण विचार द्वादशभवनसे जानने चाहिये ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ३ ॥

टीका–एक लग्नके द्वादश भाव होते हैं सो जिसजिस भावका स्वामी अपने घरको देखता होय अथवा बैठा होय तिस२भावकी वृद्धि करैहै. सौम्य ग्रह होय अथवा क्रूर ग्रह होय तौ वृद्धि करै अथवा पापी देखै तो प्रश्न भावकी हानि करै॥ अब शुभ ग्रह कितने हैं सो कहते हैं ॥ बुध, बृहस्पति, शुक्र और शुक्लपक्षका चंद्रमा पाप ग्रह क्षीण चंद्रमा, सूर्य,मंगल, शनैश्वर, राहु, केतु और जो ये ग्रह बुध शुक्रसहित होंय तौ शुभग्रह कहना चाहिये । यदि पापग्रह संग होंय तौ पापी कहना और जातकमेंभीऐसी प्रकार जानना. शुभ ग्रह शुभकर्ता और पापग्रह हानिकर्ता होतेहैं ॥ ३ ।

अथ कार्यशुभाशुभविचारमाह ।

सौम्येविलग्नेयदिवास्यवर्गेशीर्षोदयेसिद्धिमुपैतिकार्यम् ॥ अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका-जो प्रश्नके समय तात्कालिक लग्नमें शुभग्रह बैठा होय अथवा शुभ ग्रहकी राशि या घरमें होय और शीर्षोदय लग्नमें होय, शीर्षोदय लग्न ये हैं ५।६।७।८। ११ ये होंय तो कार्यकी सिद्धि कहिये और ये न होंय अर्थात् उलटे होंय तो कार्यका नाश कहिये और जो मिली होंय तो बडे कष्टसे कार्य होगा. ये सब बातें शुभाशुभग्रहकी अधिकता देखकर फल कहनी चाहिये ॥ ४ ॥

अथ नष्टवस्तुलाभज्ञानमाह ।

कोणस्थितःपूर्णतनुःशशांकोजीवेनदृष्टोयदिवासितेन ॥ क्षिप्रंप्रणष्टस्यकरोतिलब्धिलाभोपयातो वलवाञ्छुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि गई भई वस्तु मिलेगी कि नहीं ? तब लग्नका विचार करिये. जो लग्नमें परिपूर्ण चंद्रमा बैठा होय वा अपनी होरामें बैठा होय वा बृहस्पति या शुक्र देखता होय तो गई वस्तु शीघ्रही मिले अथवा शुभ ग्रह ग्यारवें स्थानमें बैठा होय तोभी गई वस्तुकी प्राप्ति होय. अब चंद्रमाका बलत्व कहते हैं. शुक्लपक्षकी पडिवासे लेके दशमीतांई चंद्रमा क मध्यबल होता है और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमीतक चंद्रमा पूर्णबल होताहै फिर पंचमीसे लेके अमावास्यातक चंद्रमाका बल क्षीण होताहै. बलवान् चंद्रमा होनेपर में कार्यकी लाभ होताहै और क्षीणमें कार्यका नाश होता है और मध्यबलमें देरीसे कार्य होताहै अथवा कार्य होय या नहीं होय इन दोनों बातोंकोभी करता है सो कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ मूकप्रश्नः।

स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितःप-

इयतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरो-
तिजीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी चिंता क्या है कहिये तब जो लग्नमें जैसे ग्रहकी मूर्ति होय तो तत्काल उसी लग्नका नवांशक देखिये वर्तमानका होय तौ धातुकी चिंता कहिये और जो सूर्यका अंश होय तो मोतीका प्रश्न कहिये और शुक्र व चंद्रमाका अंश होय तौ रूपा कहिये और बुधका अंश होय तौ सुवर्ण कहिये और बृहस्पतिका अंश होय तौ सुवर्ण रत्नजटित कहिये मंगलका अंश होय तो जस्त कहिये वा ताँबा कहिये शनैश्वरका अंश होय तौ लोह कहिये राहुका अंश होय तो पीतर कहिये. केतुका अंश होय तौ कांच कहिये अथवा सीसा कहिये. और जो लग्नपति होय तातें जानिये. और जो लग्नका नवांशक होय तो धातु कहिये और लग्नसे दूसरा नवांशक वा छठीलग्नका नवांश वा दशवें लग्नका नवांशक होय तौ जीवचिंता कहिये

और तीसरे वा ७ वे वा ग्यारहवे लग्नका नवांश होय तो मूलकी चिंता कहिये. लग्नसे चौथे स्थानमें धातु, आठ वेमें जीव नवममें मूल ऐसे प्रश्न जानिये ॥ ६ ॥

धातुंमूलंजीवमित्योजराशौ युग्मेविद्यादेतदेवप्रतीपम् ॥ लग्नेयोंशस्तत्क्रमाद्गण्यएवसंक्षेपोयंविस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इतिवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायांषट्पंचाशिकायांहोराध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी बात कहो तब विषमराशिसे विचार करे सो विषम कोनकोनसी राशि हैं सो कहितेहैं. मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ ये विषम राशि हैं इनका नवमांश देख कर कहे.पहिले नवमांशसे १ धातु, दूसरेसे २ मूल, तिसरेसे ३ जीव, चौथेसे ४धातु, पांचवेंसे५मूल, छठेसे६ जीव,सातवेंसे ७ धातु, आठवेंसे ८ मूल, नवमेंसे ९ जीव और विषम लग्नको काम, पाहिले धातु और सम लग्नको काम, .

जीव, दूजे मूल, तीजे धातु चौथे जीव, पाँचवें मू
छठे धातु, सातमें जीव, आठमें मूल, नवमें धातु केव
इसी प्रकार सब जानिये ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायाषट्पंचाशिकायां सुबोधिनीटीकायांहोराध्याय.प्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वृद्धिस्थानं गमागमौन स्तः ॥ नमृतंनचापिनष्टंनरोगशांतिर्नचा भिभवः ॥ १ ॥

टीका—वृष,सिंह,वृश्चिक,कुंभ,ये स्थिर लग्नहैं इन चारो लग्नोंमें जो वस्तु खोय जाय तो वह नहीं कहीं जाय इन लग्नोंमें और स्थानकी वृद्धि कहना और जो आ-नेवाला है सो आवेगा नहीं और रोगी मरेगा नहीं, न रोगीका रोग शांति होयगा और शत्रुके विषे पूछे तो उससे पराजय भी नहीं होगा. ये संपूर्ण काम स्थिर हैं. जो मेष, कर्क, तुला, मकर इन चर लग्नोंमें पुछे

तो ग्रामके चलवेवारो चले परदेशी वेग आवे और रोगी मरे, नष्ट वस्तु मिले नहीं, जिसको डर होय सो वेरी होय. ये चर लग्नके गुण हैं. अब द्विस्वभावके गुण कहते हैं. मिथुन, कन्या, धन, मीन ये चार लग्न द्विस्वभाव हैं. इन लग्नोंका पहिला आधा चर भाग चरके फलको देताहै और दूसरा आधा स्थिरभाग स्थिरके फलको देताहै. जो चरका भाग होय तो शीघ्र फलके देनेवाला है और स्थिरभागमें कार्य देरसे होय और चर स्थिर होय तो मध्यम फल होय अथवा मिश्रित फल होय ॥ १ ॥

तद्विपरीतंतुचरौद्विशरीरैर्मिश्रितंफलंभवति ॥ लग्नेंद्रोर्वक्तव्यंशुभदृष्ट्याशोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो चंद्रमा लग्नको देखता होय वा लग्नमें स्थित होय तो कार्यसिद्धि

अथवा शुभग्रह देखते होंय तौ विवाहादिक शुभ कार्य सिद्धि होय और जो क्रूरग्रह देखते होंय तौ शुभ कार्यका नाश होवे कार्य नहीं होंय.धरी वस्तु मिलै नहीं, चोरी मिले नहीं, युद्ध जीते नहीं, जुआ जीते नहीं, चर शुभग्रहमें शुभ और क्रूर ग्रहमें कार्यका नाश करै अथवा क्रूर कार्य होय और मिश्रितमें मिश्रित फल कहना ॥ २ ॥

अथ शत्रोर्मार्गान्निवृत्तिज्ञानमाह ।

सुतशत्रुगतैः पापैः शत्रुर्मार्गान्निवर्त्तते ॥
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नोनिवर्त्तते ॥ ३ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता वैरीका प्रश्न करे आवेगा कि नहीं?तो लग्नसे पांचवें और छठे घरमें पापग्रह पडे होंय तो वैरी मार्गमें है; आवे है; परंतु घरको लौट जायगा और लग्नसे चौथे स्थानमें पाप ग्रह पडे होंय तो वैरी आयके युद्ध करैगा परंतु भाग जायगा. आवते देर नलगे और भागते भी देर न लगेगी. यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥



अत्रैवान्यत्रयोगांतरमाह ।

झपालिकुंभकर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥
रिपोः पराजयस्तदाचतुष्पदैः पलायनम् ॥४॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता वैरीकी वार्ता पूछे आवेगा कि नहीं तो जो मीन, वृश्चिक, कुंभ, कर्क ये चरलग्नमें चौथे स्थानमें पडीहोंय तो वैरी भागिजाय और हारीजाय. और जो चतुष्पद लग्न सातवें वा चौथे स्थानमें पडे अथव मेष, वृष, सिंह तो वैरी भागजाय. और जो मकरका पूर्वार्द्ध मेष, सिंह, वृष, और धनुका उत्तरार्द्ध होय तोभी शत्रु भागजाय, यह फल कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ यायिनांशुभाशुभज्ञानमाह ।

चरोदये शुभः स्थितः शुभंकरोतियायिनाम्॥
अशोभनैरशोभनंस्थिरोदयेपिवाशुभम् ॥ ५॥

टीका–जो चर लग्न मेष, कर्क, तुला, मकर इनमें प्रश्न कर्ता प्रश्न करै और शुभग्रह स्थित होंय वा देखते होंय

तो वैरीका दल आवेगा सेना साजिके, और गढपती हारेगा. और जो स्थिर लग्न होय और क्रूरग्रह स्थित होय या देखता होय तो पहिली सेना जो आई होय सो हार जाय और गढपति जीते. पहिली सेनाका क्षयहोय. और जो स्थिर लग्न होय शुभग्रह देखता होय तो लडाईमें दोनो बराबर हैं. न वह जीते, न वह हारे ॥ ५ ॥

अथ शत्रोरागमनार्थज्ञानमाह।

स्थिरे शशी चरोदयेनचागमोरिपोर्यदा ॥
तदागमंरिपोर्वदेद्विपर्यये विपर्ययम् ॥ ६ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूँछे कि वैरी कब आवेगा तब वाही समय जो स्थिरराशिपर चंद्रमा बैठा होय और प्रश्नका लग्न चरहोय तो वैरी नहीं आवैगा. और स्थिर लग्न होय और चंद्रमा चर राशिका होय तो वैरी अवश्य करिके आवेगा. और जो स्थिरलग्न होय और द्विस्वभाव राशिपर चंद्रमा होय तो वैरी आवतो होय परंतु मार्गहीसे घरको लौटिजाय ऐसा फल कहिये ॥ ६ ॥

शत्रोर्विनिवृत्तिज्ञानमाह ।

स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचंद्रमाः ॥
निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोपिसन् ॥७॥

टीका—यहां जो पहिलेही कहि आये हैं ताही भांति फेर कहतेहैं. जो प्रश्न पूछे तो जो चरलग्नमें चंद्रमा होय और प्रश्नलग्न द्विस्वभाव होय तो वैरी आधे रस्तेसे लौटि जाय घरको, और अपने घर बैठरहै.और जो द्विस्वभाव लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्नभी द्विस्वभाव होय तौभी आधेमार्गसे लौटिजाय घरको बैठरहै. अथवा द्विस्वभाव लग्नपर चंद्रमा होय और चरलग्न होय तो वैरी शीघ्रही आवे और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो गढको घेर लेय और ग्रामको तोड लेय जीते यह फल कहिये॥७॥

चरेशशीलग्नगतोद्विदेहः पथोर्ध्वमागत्यनिवर्ततेरिपुः ॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्यात्पराजयः स्यादशुभेक्षिते तु ॥ ८ ॥



टीका—जो प्रश्नकर्त्ता पूछे तासमय चरलग्नपर चंद्रमा होय और द्विस्वभावलग्न होय तो वैरी आधेमार्गसे लौटि जाय घरको. अथवा द्विस्वभाव लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्न चर होय तो वैरी शीघ्रहीसे आवै. और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो आयके गढको तोडडारे और ग्रामको लूट लेय ॥ ८ ॥

अथ गमागमयोगप्रश्नमाह ।

अर्कार्किज्ञसितानामेकोपिचरोदयेयदा भवति ॥ प्रवदेत्तदाशुगमनंवक्रगतैर्नेतिवक्तव्यम् ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे उस समय सूर्य्य,शनैश्चर, बुध,शुक्र इन चारों ग्रहोंमेंसे कोईभी चरलग्नमें पडेहोंय तो वैरी शीघ्रही आवे और जो इनमेंसे कोई वक्री होय तो न आवे यह फल इसका कहना चाहिये ॥ ९ ॥

अथान्ययोगोत्तरमाह ।

स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेक्षिते गमागमौनैवव

देत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचषष्ठारिपुसंगमायपापाश्चतुर्थोविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका–जो कोई प्रश्न करे वैरीके आगमनकी वात कहिये तब जो स्थिरलग्न होय और बृहस्पति और शनैश्वर देखते होंय तो वैरी नहीं आवैगा और जो कोई किसीसे लडनेको जाय और वैरीसे संग्राम करना चाहे तौ वह कभी नजाय और जो लग्नसे तीसरे पांचवें छठें स्थान पापग्रह पडे तो वैरी शीघ्र आवै और जो लग्नते चौथे स्थान पापग्रह पडे तो वैरीकी निवृत्ति होय उसके उस वैरीका नाशहोय ॥ १० ॥

अन्यच्चगमागमयोगमाह ।

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवनस्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिबुकेयदातदाशीघ्रमायाति ॥ ११ ॥

टीका–जो पूछे कि वैरी आवैगा कि नहीं तो प्रश्न लग्न होय तातें जो चतुर्थ स्थान तामें सूर्य –

बैठे होंय तो परचक्र नहीं आवैगा और जो बुध, बृह स्पति,शुक्र बैठे होंय तो वैरी शीघ्रही आवैगा यह लग्नसे चौथे स्थानकी वार्ताहै ॥ ११ ॥

मेषधनुःसिंहवृषायद्युदयस्थाभवंतिहिबुके वा ॥ शत्रुर्निवर्ततेवैग्रहसहितावाविमुक्तावा ॥ १२ ॥

टीका–जो पूछे वैरी आवैगा कि नहीं तो जो मेष लग्नमें होय वा वृषलग्न होय वा धनलग्न होय वा सिंह लग्न होय वा लग्नसे चौथे स्थानमें येही लग्न पडी होंय तो शत्रु ठहरे नहीं और इनमें ग्रह बैठे होंय या नहीं बैठे होंय, तब शत्रु नहीं सन्मुख ठहरै ॥ १२ ॥

अथ शत्रोरनागमनार्थयोगमाह।

स्थिरराशौयद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितस्तदाशत्रुः ॥ उदयेरविर्गुरुर्वाचरराशौस्यात्त द्रागमनम् ॥ १३ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै तब जो स्थिरलग्न होय और शनि बृहस्पति तामें बैठे होंय तो वैरी अपने घर ठारहे पर चल्यौ चाहे है पर चलना नहीं होय. और जो चरराशि होय और इनमें सूर्य्य, बृहस्पति, शनि कोईभी ग्रह होय तो वैरी ढोल निशान बजाता भया सेना सहित युद्ध करै इसका यह फल है सो कहिये ॥ १३ ॥

अथ प्रयातुर्निवृत्तिसंख्यायोगमाह ।

ग्रहःसर्वोत्तमबलो लग्नाद्यस्मिन्गृहेस्थितः ॥ मासैस्तुतुल्यसंख्याकैर्निवृत्तिर्यातुरादिशेत् ॥ १४ ॥ चरांशस्थेग्रहेतस्मिन्कालमेवं विनिर्दिशेत् ॥ द्विगुणंस्थिरभागस्थेत्रिगुणंद्व्यात्मकांशके ॥ १५ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वैरी कितने दिनमें आवेगा और कितने दिनमें निवृत्त होयगा तौ प्रश्नलग्नमें जो सबल ग्रह पडे होंय और लग्नसे जितने स्थानमें पडे होंय तो उतनेही महीनेमें जितनेही दिनोंमें और जितने

घडीमें आवेगा. और जो वैरीने आयके गांव, गढ, घ
घेराहोय तो प्रश्नकर्ता पूछे कि,परचक्र कितने दिन
जायगा, तो लग्नते जितने स्थानमें ग्रह पडे होंय तित
महीनेमें तितनेही दिनोंमें और तितनीही घडीमें जायग
और जो चरलग्न होय तो उससे दुगुने दिनमें जायग
यह कहे और द्विस्वभाव लग्न होय तो इससे तिगु
दिनमें जायगा ऐसा कहे ॥ १४ ॥ १५ ॥

अत्रैवमतांतरमाह ।

यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतेर्यदा ॥
करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंब्रुवतेऽपरे ॥ १६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि प्रवासी कब घर आवेगा
अथवा परचक्र कब आवेगा तौ जो लग्नका स्वामी सा-
तवें स्थानमें पडाहोय तो प्रवासी अनायास आयजाय
अथवा वक्रीहोइके फिर ग्रह मार्गी होय ताई दिन घर
आय जाय और इसी प्रकार परचक्रभी आयजाय ऐ-
सा देखिके फल कहना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ शत्रोरागमनादिदिनप्रमाणमाह।
उदयर्क्षाच्चंद्रर्क्षेभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः।
आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् १७
इति श्रीषट्पंचाशिकायांगमागमोद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

टीका—जो पूछे कि आनेवाला वैरी कितने दिनमें आवेगा तो प्रश्नलग्नसे जिस स्थानमें चंद्रमा बैठा होय तितनेही दिनमें आवेगा यह कहिये. पर जो कोई मध्यमें ग्रह न होय तो आवेगा और जो मध्यमें ग्रह उसके साथ बैठे होंय तो न आवेगा यह कहना ॥ १७ ॥

इति श्रीषट्पंचाशिकाभाषाटीकायां गमागमाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अथ जयपराजयावाह।
दशमोदयसप्तमगाःसौम्यानगराधिपस्य विजयकराः ॥ आरार्किज्ञगुरुसिताःप्रभंगदाविजयदानवमे ॥ १ ॥

टीका–जो कोई प्रश्नकर्ता यह प्रश्न करे कि यह ग वैरीने घेरलियाहै सो टूटेगा या नहीं? तब प्रश्नलग्न दशवें या सातवें वा लग्न इन स्थानोंमें जो सौम्य ग्रह पडा होय तो गढपती जीते. और जो नवमें स्था नमें मंगल शनैश्वर बैठेहोंय तो नगराधिपतिकी हार औ गढमें दृढ संग्राम होय और अग्नि प्रज्वलित होय औ बुध,गुरु,शुक्र इनमेंसे कोईभी ग्रह नवमें घरमें बैठा होय तो गढपतिकी विजय अर्थात् जीत कहिये ॥ १ ॥

अथनगरयायिनोविजयपरिज्ञानम् ॥

पौरास्तृतीयभवनाद्धर्माद्वायायिनः शुभैःशुभ दाः ॥ व्ययदशमायेपापाःपुरस्यनेष्टाःशु भायातुः ॥ २ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूछे कि वैरीने गढ नगर घेराहै सो टूटेगा कि नहीं ? तब प्रश्नतें तीसरे लग्न विचा रिये और तीसरेते नवम लग्न विचारिये. जहां लग्नमें

सौम्य ग्रह बैठे होंय तो गढपति जीते और जो नवमस्था-
में सूर्यलग्न सौम्य ग्रह परे तो परदल जीते गढ ग्रामका
मालिक हारेगा. अथवा जो ग्यारहें वा बारवें स्थान
क्रूरग्रह पापग्रह पडे तो ग्रामाधिपति हारे. ऐसे योगमें
जाय सो जीत आवे अथवा सौम्यग्रह वा क्रूरग्रह मिले
होंय तो पहिले युद्ध होय तौ हाथी घोडा रथ प्यादे सब
मारे जायँ, पछिसे जीतहोय. आप आपको हटजायँ.
ऐसा फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ संधिविरोधज्ञानमाह ।

नृराशिसंस्थाह्युदयेशुभाःस्युर्व्ययायसंस्था-
श्चयदाभवंति ॥ तदाशुसंधिंप्रवदेन्नृपाणां
पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका–जो नरराशि लग्न होय (नरराशि) लग्न
कहिये मिथुन,तुला,कुंभ ये तात्काल लग्न होय और उसमें
शुभग्रह बैठे होय तो राजाओंकी परस्पर संधि कहिये
और जो पापग्रह सूर्य, भौम, शनि, क्षीण चंद्रमा द्विस्व-

भाव राशि विषे स्थित होय तो राजाओंका परस्प विग्रह होयगा. ऐसा विचार करिके कहिना ॥ ३ ॥

केंद्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नगाः प्री-
तिम् ॥ कुर्वंति पापदृष्टाः पापास्तेष्वेव वि-
परीतम् ॥ ४ ॥

टीका—केन्द्र कहिये लग्न,चौथा,सप्तम और दशमस्थान इन स्थानोमें जो शुभग्रह नरराशिगत स्थित होंय औ शुभग्रह देखते होंय और पापग्रहकी कोईभी दृष्टि नहीं होय तो परस्पर प्रीतिसहित संधि होजाय और जो उसी स्थानोंमें पापग्रह होय और दृष्टिभी होय तो उलटा फल जानना अर्थात् विशेष करिके वैरभाव जानो ऐसा इसका फल कहिये ॥ ४ ॥

अथ सेनागमनदेशस्थागमनमाह ।
द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुक्रौयदातदा ॥
आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीवानसंशयः॥५॥
इति षट्पंचाशिकायांजयपराजयकथनंनाम
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका–प्रश्नलग्नसे दूसरे वा तीसरे स्थानविषे शुभ ग्रह गुरु, शुक्र पडें तो जो प्रवासी ग्राम गया हो सो शीघ्रही आवे और शत्रुकी सेनाभी शीघ्रही आवै इसमें कुछ संदेह नहीं. और फौजभी लौटिके घरआवे यह फल कहिना चाहिये ॥ ५ ॥

ति षट्पञ्चाशिकासुबोधिनीटीकायां जयपराजयाध्यायस्तृतीयः३॥

अथ शुभाशुभान्याह ।

केंद्रत्रिकोणेषुशुभास्थितेषुपापेषुकेंद्राष्टमवर्जितेषु ॥ सर्वार्थसिद्धिंप्रवदेन्नराणांविपर्ययस्थेषुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूछै कि मेरा कार्य होयगा कि नहीं?तब लग्नसे चौथे सातमें दशमें नवमें पांचमें स्थानमें जो शुभग्रह पूर्ण चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ये बैठेहोंय तो शुभ कहना. और केंद्रस्थानमें और पापग्रह युक्त न होय तो वा मनुष्यको सर्व

कहना. इनके विपरीत ग्रह होंय तो अशुभ कहिये. जं लग्न केंद्रमें नवमें पांचमें पापग्रह होय तो अर्थसिद्धि होय और हाथके बीचमें जो धन होय तिसका नाश होय यह फल कहना ॥ १ ॥

अथ लाभालाभमाह ।

त्रिपंचलाभास्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफलाश्चपापाः ॥ तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृराशयस्तेषुशुभंवदंति ॥ २ ॥

टीका—जो कोई प्रश्नकर्त्ता पूछै कि मुझे लाभ हो कि नहीं! तब यह विचार लग्नसे तीसरे पांचमें छठे सा में जो शुभग्रह पडे होंय तो शुभ लाभफलदायक हो. औ जो इन स्थानोंमें पापग्रह पडे होय तो अशुभ फल करे और जो कन्या तुला मिथुन कुंभ ये लग्न होंय और सो नरराशि होय तो शुभफल करे हैं यह फल कहना ॥ २

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्या मानार्थदाःस्वसुतलग्नगताभवंति॥ पापाव्ययायस-

हितानशुभप्रदाःस्युर्लग्नेशशीनशुभदोदश-
मेशुभश्च॥ ३॥

टीका–जो पृच्छक पूछे कि लाभालाभकी बात तो किसी स्थानकी वा गाँवकी वा ठाकुरकी वा मनुष्यकी, तो सौम्यग्रह दूसरे पांचमें ग्यारहवें इन स्थानोंमें पडे होंय तो संपूर्ण बातकी लाभ कहिये. और ग्रामादिक-कीभी लाभ कहिये. राजाओंमें मान्य होय.और जो लग्नते पांचमें, दूसरे, ग्यारहमें बारहमें इन स्थानोंमें पापग्रह पडे होंय तो कार्यका नाशहोय, विरोध होय, और चंद्रमा अंधेरे पक्षका क्षीण लग्नमें दशमस्थान पडे तो प्रत्यक्ष नाशको करै है. यह विचार करने योग्य है ॥ ३ ॥

इंदुंद्विसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थंपश्येद्गुरुःशु-
भफलंसकलंकृतंस्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुत-
नैधनगाश्चपापाः कार्यार्थनाशभयदाःशुभ-
दाःशुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता लाभालाभकी पूछै तब

चंद्रमा दूसरे वा सातमें वा दशमें वा ग्यारहमें छठे
तीसरे इन स्थानोंमें बैठाहोय और बृहस्पति पूर्ण
देखता होय तो संपूर्ण लाभ कहिये. और स्त्रीकी ल
कहिये. और जो तीसरे वा नवमें वा पांचमें वा आ
स्थानमें पापग्रह युक्त होय तो कार्यकी सिद्धि नहीं हो
और इन स्थानों में शुभग्रह होय तो शुभफल कहि
कार्यकी सिद्धि कहिये. यह बात जानो निश्चय का
होगी ॥ ४ ॥

अथ रोगार्त्तस्यशुभाशुभफलमाह ॥

शुभग्रहाःसौम्यनिरीक्षिताश्चविलग्नसप्तम
पंचमस्थाः ॥ त्रिषड्दशायेचनिशाकरः
स्याच्छुभंवदेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचिता-
यांषट्पंचाशिकायांचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥ ।

टीका—अब प्रश्नकर्ता यह पूछे कि रोगार्थ
न होगा कि नहीं ? तब प्रश्नलग्न वा सप्तम

ष्टम वा पंचम इन स्थानोंमें जो शुभ ग्रह बैठाहोय और
ुभग्रहकी दृष्टि होय और तीसरे छठे दशमें ग्यारहमें
ंद्रमा बैठाहोय तो रोगसे निवृत्ति कहिये और जो इससे
वपरीत इन्हीं स्थानोंमें पापग्रह बैठे होंय तो रोगी जीवे
हीं, थोडेही कालमें रोगी मरे यह फल कहना ॥ ५ ॥
ति श्रीषट्पंचाशिकायांसुबोधिनीटीकायांशुभाशुभाध्यायश्चतुर्थः४॥

अथ प्रवासचिंतामाह ।

दूरगतस्यागमनंसुतधनसहजास्थितैर्ग्रहैर्ल-
ग्नात् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिलब्धागमनंगुरुसि-
ताभ्याम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे कि मेरी चीज गईहै सो
ीलेगी कि नहीं ? और जो परदेशी परदेश गयाहै सो
वेगा कि नहीं। तब लग्नसे दूसरे, तीसरे स्थान वा पांच-
में शुभग्रह बैठे होंय तो परदेशी गयाहुआ भी
आवे, और गईभई वस्तु भी प्राप्त हो

और बृहस्पति शुक्र बैठे होंय तो उसी दिन घर आ
जाय और नष्टवस्तु उसीदिन मिले निश्चय जानना॥ १

अन्यदागमनमाह ।

जामित्रेत्वथवापष्ठेग्रहःकेंद्रेऽथवाक्पतिः ॥
प्रोपितागमनंविद्यात्त्रिकोणेज्ञेसितेपिवा ॥ २

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूछे आगमनकी बात तो प्रश्
लग्नसे सप्तम स्थानविषे छठे स्थानविषे, कोई ग्रह बैठ
होय और केंद्रस्थानमें बृहस्पति बैठा होय तो प्रोषि
सातदिनमें वा सत्ताईस दिन ताई घरमें, आजाय. औ
नवमें, पांचमें स्थानमें बुध शुक्र बैठे होंय तो प्रवासी
शीघ्र घरमें आवै. और जो इसके विपरीत (उलट) हो
तो विपरीत कहिये अर्थात् आगमन नहीं होगा ॥ २

अष्टमस्थेनिशानाथेकंटकैःपापवर्जितैः ॥
प्रवासीसुखमायातिसौम्यैर्लाभसमन्वितः ॥३

टीका–जो प्रश्नलग्नमें अष्टमस्थानविषे चंद्रमा बैठाहो
केंद्रस्थानमें पाप ग्रह नहीं होय तो प्रवासी सुखपूर्व

रमें आवे और केंद्रमें शुभग्रह पडे होंय तो प्रवासी शीघ्रही आवे और दशवें स्थानमें सूर्य मंगल वा शनि होय तो उसका आना नहीं होय और जो दशवें स्थानमें बृहस्पति वा चंद्रमा होय तो प्रवासी मार्गमें आय-तो जानिये और जो दशमें शनैश्चर होय तो प्रवासीका मरण कहिये वा इन लग्नविषे तुला कन्या मिथुन धन यह होय तो परदेशी स्त्रीसहित घर आवे और राजप्रसाद व्यापारसे धन लाभ करिके घर आवे यही सब बात निश्चय करिके जानना ॥ ३ ॥

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीये रिपु केंद्रगे वा ॥ सौम्यैरदृष्टा वधबंधदाः स्युर्नष्टा विनष्टा मुषिताश्च वाच्याः ॥ ४ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूछे कि परदेशी सुखीहै कि दुःखीहै ? वह जीताहै कि मरगयाहै ?तब प्रश्नलग्नको देखे जो पृष्ठोदय लग्न मेष,कर्क, धन, मकर,मीन इनमेंसे कोई लग्न होय और पापग्रह केंद्रस्थानमें होय और शुभ-

ग्रहकी दृष्टि न होय तो प्रवासीको ताडन बन्धन हुआ जानिये और पापग्रहकी पापदृष्टि होय तो प्रवासीका मरण जानिये वा क्लेशयुक्त जानिये वा मार्गमें चोरों करिके नष्ट हुआ जानिये और उसका आगमन नहीं होय ॥ ४ ॥

प्रवासिनश्चागमने कालमाह ।

ग्रहोविलग्नाद्यतमेगृहेतुतेनाहताद्वादशराशयःस्युः॥तावद्दिनान्यागमनस्यविद्यान्निवर्तनंवक्रगतैर्ग्रहैस्तु ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि, प्रवासी कितने दिनमें पीछे आवेगा? तब प्रश्नलग्नसे देखके जिस स्थानमें कोई ग्रह बैठाहोय तितनी संख्या द्वादश गुणा करे जो अंकसंख्या आवे उतनेही दिन पीछे प्रवासी घरमें आवे और जो ग्रह वक्री होय ताईदिन परदेशी घर आवे यह फल जानना ॥ ५ ॥

इति श्रीषट्पंचाशिकायां सुबोधिनीटीकायां प्रवासिचिंताफलकथनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ नष्टवस्तुप्राप्तिमाह।

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेपिवा ॥
स्थितंतत्रैवतद्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, मेरी वस्तु गईहै मिलेगी कि नहीं, और कहाँ है? तब वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ इन स्थिर लग्नोंमेंसे कोई होय वा इन्हीं लग्नोंका नवांश होय वा वर्गोत्तम लग्न होय तो वह वस्तु अपनेही पासके आदमीने लीनीहै और वह वस्तु उसी स्थानमें स्थितहै दूसरे घरमें नहीं गई है वह मिलेगी सही. यह फल विचारकर कहना-किसी चोरने नहीं लीहै, घरमें है, बाहिरके आदमी ने नहीं लीनहै ॥ १ ॥

अथ स्थानांतरगतद्रव्यमाह।

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥
द्वारदेशेतथामध्येगृहांतेचवदेद्धनम् ॥ २ ॥

टीका—लग्नके द्रेष्काण तीन होतेहैं—१—से १०

अंशोंतक पहिला, ११–२० अशोंतक दूसरा, और २१–३० अंशोंतक तीसरा द्रेष्काण जानना. लग्नका पहिला द्रेष्काण प्रश्नकाल में होय तो द्वार के विषे चीज कहिये और दूसरे भागमें होय तो घरके अंतर्भागमें कहे और जो चर आदिके विषे वस्तु गई होय तो घरके पीछे जानिये ऐसा कहना चाहिये ॥२॥

अथ नष्टद्रव्यादेर्लाभालाभमाह ॥

पूर्णःशशीलग्नगतःशुभोवाशीर्षोदयेसौम्य-
निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदा-
शुलाभोपयातोबलवाञ्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका–जो कोई प्रश्नकर्ता पूछे कि, गई हुई वस्तु मिलेगी कि नहीं ? तब तात्कालिक लग्नमें जो शीर्षोदय लग्न होय और पूर्णचंद्रमा वा कोई शुभग्रह लग्नमें बैठाहोय अथवा शुभग्रहकी दृष्टि होय तो गईहुई वस्तु शीघ्रही मिलेगी और शुभग्रह बलवान् होकर, ग्यारहवें

बैठाहोय तो गई हुई द्रव्यकी लाभ होय और जो पृष्ठोदयमें पापग्रह बैठे होंय तो वस्तु पावै सही, यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ चौरदिशामाह ।

दिग्वाच्यार्केद्रगतैरसंभवेवावदेद्विलग्नक्षात् ॥
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजनावाच्याः॥४॥

इति श्रीन० पृथु० विरचितायांषट्पंचाशि-
कायांनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्ठः ॥ ६ ॥

टीका–जो कोई पूछे कि,मेरी वस्तु कौनसी दिशामें गई तब प्रश्नलग्नसे विचार करै. जो कोई ग्रह केंद्रमें स्थित होय उसकी दिशा कहनी. जो सूर्य्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, शशि बुध, और जीव ये आठों दिशाओंके स्वामी हैं जो सूर्य्य केंद्रमें होय तो पूर्वदिशामें कहिये और जो शुक्र बैठाहोय तो अग्निकोणमें कहिये. और जो मंगल केंद्रमें होय तो दक्षिणदिशामें कहिये और राहु

होय तो नैर्ऋत्यदिशामें कहिये शनि होय तो पश्चिममें कहिये. चंद्रमासे वायव्य कहिये. बुध होय तो उत्तर और बृहस्पतिसे ईशान कहिये. और जो दो ग्रह केंद्रमें होंय तो जिसका अधिक बल होय उसकी दिशा कहिनी और जो केंद्रमें कोईभी ग्रह न होय तो प्रश्नलग्नसे दिशा कहनी. मेष सिंह धन लग्नसे पूर्व, वृष कन्या मकरसे दक्षिण, मिथुन तुला कुम्भसे पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीनसे उत्तर दिशा कहनी चाहिये.फिर लग्नका नवमांश देखके कोस योजनका प्रमाण कहना तहाँ प्रथम नवमांश के पंचमांशतक गिनना और पंचमसे नवम तांई गिनना जो अंश गणनामें आवे अर्थात् जितनेअंश गतहोंय तितने योजन वह वस्तु गई जानिये ऐसा फल जानना ॥ ४ ॥

इति श्रीषट्पञ्चाशिकासुबोधिनीटीकायां
नष्टवस्तुप्राप्तिःषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ मिश्रकाध्यायः।

तत्रगुर्विण्याः पुत्रदुहित्रोर्जन्म वरस्य च पुनः कन्यालाभालाभफलमाह।

विषमस्थितेर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांगनायाश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतोन्यथावामम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न पूछेकि मेरी स्त्रीके गर्भ हैउसे या भैंस या गौ या घोडीके क्या होगा।कहो. तहां प्रश्नलग्नसे विचारे,जो शनैश्चर विषमस्थानमें अर्थात् तीसरे पांचमें सातमें नौमें लग्नमें या ग्यारहवेंस्थानमें बैठाहोय तो पुत्रकाजन्म कहिये और द्वितीय आदि छः स्थानोंमें अर्थात् दूसरे चौथे आठवें दशवें बारहवें इन स्थानोंमें जो शनैश्चर बैठाहोय तो कन्याका जन्म कहिये और जो प्रश्नकर्ता स्त्रीकी पूछे तो स्त्रीकी प्राप्ति इन्हीं स्थानोंसे कहिये जो प्रश्नलग्नमें शनैश्चर समस्थानोंमें होय

। उसे स्त्रीकी प्राप्ति होय और जो विषमस्थानमें बैठा
ाय तो स्त्रीकी प्राप्ति नहीं यह फल जानना
ाहिये ॥ १ ॥

अथ विवाहज्ञानमाह ।

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशी
लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणकेंद्रे
षुवासौम्याः ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता विवाहका प्रश्न करै कि विवाह
होयगा कि नहीं? तहां प्रश्नसे तीसरे पांचमें छठे सातमें
ग्यारहवें स्थानमें चंद्रमा बैठाहोय और सूर्य, बुध, गुरु
इनकी दृष्टि होय तो विवाह अवश्य करिके होय और
जो पांचमें, नवमें और केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह बैठे होंय
तोभी किसी प्रकारसे विवाह अवश्य होयगा और चंद्र-
मा यथोक्तस्थानमें न होय तो विवाह नहीं होगा यह
फल कहिना चाहिये ॥ २ ॥

अथ वृष्टिज्ञानमाह ।

चंद्रार्कयोःसप्तमगौसितार्कीसुखेष्टमेवापित
थाविलग्नात् । द्वितीयदुश्चिक्यगतौतथाचव
र्षासुवृष्टिंप्रवदेन्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वर्षा होयगी कि नहीं तब
प्रश्नलग्नमें सूर्य चंद्रमा स्थित होंय और चंद्रमासे सातवें
स्थानमें शुक्र शनिभी यथासंभव स्थित होंय तो वर्षा होय
वा सूर्य्यसे दूसरे, चौथे, अष्टमस्थानमें शुक्र शनैश्वर स्थित
होंय तौभी वर्षा होय और जो चंद्रमाके स्थानमें
शुभग्रह बैठाहोय तौभी वर्षा कहिये. यह फल वर्षाका
कहना योग्य है ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसि
तेपक्षे ॥ चंद्रेवाप्युदयगते जलराशिस्थे
वदेद्वर्षम् ॥ ४ ॥

टीका—जो कोई पूंछे कि, मेघ वर्षेगा या नहीं तब प्रश्न

लग्नविषे शुभ ग्रह जलराशि—कर्क, मकर, कुम्भ, मीन, वृश्चिकविषे स्थितहोंय और सौम्यग्रह केंद्रस्थान विषे स्थितहोंय अथवा दूसरे तीसरे होंय तो शीघ्रही जल वर्षे वा शुक्लपक्षमें चंद्रमा जलराशिमें स्थित होकर लग्नमें बैठाहोय वा सप्तमस्थानमें होय तो निश्चय करिकै वर्षा होय. यह फल जानिये ॥ ४ ॥

अथ गर्भिण्यागर्भेकिंभविष्यतितत्राह ।

पुंवर्गे लग्नगते पुंग्रहदृष्टे बलान्विते पुरुषः ॥
युग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेस्त्रीबुधयुक्तेतु गर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—प्रश्नकर्ता गर्भिणी गौ है स्त्री पूँछे कि,उसके कुछ होगा कि नहीं और क्या होगा. तब लग्नविषे जो पुरुष लग्न मेष,मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ, ये होंय तो और पुरुष ग्रह सूर्य, मंगल, गुरुकी दृष्ट होय और बलवान् होय तो पुरुष जानिये और जो स्त्रीलग्न अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन ये समलग्न

होय और स्त्रीग्रह चंद्रमा शुक्र देखता होय तो स्त्री वा कन्याका जन्म जानिये और जो लग्नमें बुधकी दृष्टि होय तो सगर्भा कहिये और पंचम स्थानमें क्रूर ग्रहकी दृष्टि होय तो गर्भ नहीं होय ऐसा फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रष्टुःस्त्रीपुंविषयेप्रश्नमाह ।

कुमारिकांबालशशी बुधश्चवृद्धांशनिःसूर्य गुरूप्रसूताम् ॥ स्त्रीं कर्कशांभौमसितौ-विधत्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ६ ॥

टीका—जो कोई पूँछे कि, स्त्री कैसीहै तहाँ लग्नमें चंद्रमाको देखना जो चंद्रमा शुक्लपक्षकी द्वितीयासे लेके दशमी पर्य्यंतका होय तो कुमारी कन्या होय और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमी पर्य्यंत होय तो यौवनवती कहिये और पंचमीसे अमावास्यातांईका होय तो वृद्धस्त्री कहिये और लग्न विषे बुध होय तो अथवा डूबता होय तोभी यौवनसहित कन्या कहिये

और याही क्रमसे वृद्धस्त्री और वही क्रमसे विचारिये जो लग्नविषे शनैश्चर स्थितहोय अथवा बलवान् दृष्टिहोय तो स्त्री वृद्ध जानिये सूर्य और बृहस्पतियुक्त दृष्टि होय तो स्त्रीको प्रसूति सहित जानिये और मंगल शुक्र होंय तो कर्कशा और तरुण स्त्री कहिये इसीप्रकार पुरुषोंकाभी क्रमजानना चाहिये॥ ६ ॥

मनसिकाचिंतावर्त्ततेएतदाह ।

आत्मसमं लग्नगतैर्भ्रातासहजस्थितैःसुतः सुतगैः ॥ माता वा भगिनी वा चतुर्थगैःशत्रुगैःशत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्मांश्रितोगुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिर्मित्रशत्रुपुत्तथैवप्राच्यंबलयुतेषु ॥ ८ ॥

टीका–जो प्रश्नलग्नमें सूर्यादिक ग्रह बलसहित लग्नविषे स्थित होंय तो अपने समान कोई कोई पुरुष चित्तमें जानिये और जो तृतीय र ग्रह बलिष्ठ

होंय तो भ्रातृप्रश्न कहिये और चौथे स्थान विषे ग्रह बली होंय तो माताभगिनी दासीकी चिंता कहिये और जो पंचम स्थान विषे ग्रह बलिष्ठ हों तो पुत्र कन्याकी चिंता कहिये और जो ग्रह षष्ठस्थान विषे बली होयके बैठे होंय तो शत्रुकी चिंता कहिये और जो सप्तमस्थानमें ग्रह बली होय तो भार्याकी चिंता कहिये और नवम स्थान विषे ग्रह बली होंय तो धर्मकी चिंता कहिये और जो दशम स्थान विषे ग्रह बली होंय तो गुरु पिताकी चिंता जानिये जो लग्नका नवमांश कर्का अधिपति मूर्तिस्थान विषे स्थित होंय तो अपने शरीरकी चिंता कहिये यह मित्रभाव देखकर बलाबल कहना जो शुभग्रहकी दृष्टियुक्ति होय तो शुभफल कहना और शत्रु पापग्रह दृष्टियुक्ति होय तो अशुभ फल कहना ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथप्रवासचिंताज्ञानमाह।

चरलग्नेचरभागेमध्याद्भ्रष्टेप्रवासचिंतास्या

त् ॥ अष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिन वक्री ॥ ९ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूँछे तब चर अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर, इनमेंसे कोई लग्न होय अथवा इनका नवमांश होय तो मध्यम स्थानमें कहो और पंचमांशसे च्युति कहो और छठे आदि नवमांश होय तो यहाँ प्रश्नकर्ताको प्रवासचिंता कहिये और जो सप्तमस्थानका नवमांश होय तो कोई ग्रहकी दृष्टि होय तो प्रवासीकी (अनेक प्रकारसे आगमनकी) चिंताकरता जानना परंतु वह ग्रह वक्री न होय और जो वह वक्री होय तो स्थितहुवाभी प्रदेश अवश्य जायगा यह फल कहना ॥ ९ ॥

अथ प्रष्टाचेत्पृच्छतिकीदृश्यास्त्रियासहमे संयोगआसीदित्येतत्परिज्ञानमाह ।
अस्तेरविसितवक्रैःपरजायांस्वांगुरौबुधेवेश्याम् ॥ चंद्रेचवयःशशिवत्प्रवदेत्सौरेन्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे कि कैसे स्त्रीके साथ मेरा संग हुआथा, तो ऐसा कहे; लग्नसे मंगल, शुक्र, सप्तमस्थान विषे स्थितहोयँ तो परस्त्रीसंयोग कहना और जो बृहस्पति सप्तमस्थानमें होय तो अपनी स्त्रीका संयोग कहना और बुध सप्तम होय तो वेश्याका संगम जानना । वैसेही चंद्रमासे स्त्रीकी उमर कहना नवमस्थानमें चंद्रमा होय तो बालक कहना और जो तरुण होय तो तरुण कहना और जो वृद्ध होय तो वृद्ध कहना ये सब बातें चंद्रमाका बल देखके जैसी चंद्रमाकी अवस्था होय तैसी अवस्था पीछे कहनी चाहिये. यही फल कहने योग्यहै और शनैश्चरसे निकृष्ट जाति कहना ॥ १० ॥

अथ रोगार्तस्यपरदेशेस्थितस्यमृत्युयोगमाह ।

मंदः पापसमेतोलग्नात्रवमेशुभैरयुतदृष्टः ॥
रोगार्तःपरदेशेचाष्टमगोमृत्युकरएव॥११॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूँछे कि, मेरा मनुष्य परदेश गयाहै वह बीमार है सो जीवे है या नहीं ? तब प्रश्नसमयमें जो शनैश्चर और पाप ग्रह नवमस्थान विषे स्थित होंय और शुभग्रहकी दृष्टियुक्त न होय तो परदेशमें वह मनुष्य रोगसे बहुत पीडित कहना और जो शनैश्चर पापग्रह सहित वा शुभग्रहसहित अष्टमस्थानमें स्थितहोय तो रोगीकी मृत्यु कहना वह मनुष्य कदाचित् नहीं जीवेगा ऐसा फल कहना ॥ ११ ॥

अथ प्रश्नेपितान्यदेशस्थःकथंतिष्ठतितदाह ।

सौम्ययुतोर्कः सौम्यैः संदृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थश्च ॥ तस्माद्देशादन्यंगतःसवाच्यःपितातस्य ॥ १२ ॥

टीका–जो प्रश्नकर्ता पूँछे कि, मेरा पिता परदेश गयाहै सो वह उसी देशमें है या और किसी देशमें गयाहै? तब जो प्रश्नलग्नमें या अष्टमस्थानमें सूर्य सौम्य ग्रह करके

युक्त होय या शुभग्रहकी दृष्टि होय तो या जष्टमलग्न होय तो उस देशसे और देशमें गया जानिये और सूर्य इसके विपरीत होय तो उसी देशमें कहना ऐसा फल कहना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ द्रव्यतस्करस्वरूपकालदिग्देशानां ज्ञानमाह।

अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यंद्रेष्काणैस्तस्कराःस्मृताः ॥ राशिभ्यःकालदिग्देशावयोज्ञातिश्चलग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यपुत्रपृथुयशोविरचितापट्पश्चाशिकासमाप्ता ।

टीका—प्रश्नसमयमें जो लग्न होय तिस्के नवमांशकसे तो द्रव्य कहनी और धातु मूल जीव जो पीछे कहि आयेहैं तिससे राशिकी तुल्य वर्ण कहना जैसे सूक्ष्म जातकमें कहाहै कि, मेषराशिका लालवर्ण, वृषका श्वेत,

मिथुनका हरित, कर्कका पाटल, सिंहका पांडुर, कन्याका चित्र विचित्र, तुलाका श्याम, वृश्चिकका भूरा, धनका पीला, मकरका कर्पूरी, कुंभका बभ्रुक, मीनका मलिनवर्ण जानिये और लग्नके नवमांशकसे दीर्घ ह्रस्व मध्यम यह भाव जानना चाहिये. तहां कुम्भ, मीन, मेष, वृष, ह्रस्व नाम छोटा जानिये और मिथुन, कर्क, धन, मकर इनके नवमांशसे मध्यम भाव जानिये, याने न छोटा न बडा, सम जानिये. और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिकके नवमांशसे दीर्घ भाव कहिये ऊँचा और जो अंशाधिपति बलसहित होय तो पुष्टदीर्घ कहिये अस्तगत होय तो क्षीण छोटी वस्तु जानिये और लग्न के द्रेष्काण विषे होय तो चोर जानिये. जैसी द्रेष्काण की आकृति होय तैसी चोरकी भी जानिये तहाँ विशेष इतना है कि, मेषके प्रथम द्रेष्काणविषे परशुहस्त पुरुष कृष्णवर्ण लालनेत्र विकरालरूप कहिये. द्वितीय द्रेष्काणसे लालवर्ण स्थूलोदर दीर्घमुख टेढे पाँव क-

हिये मेषके तृतीयद्रेष्काणमें क्रूर पुरुष कपिलवर्ण र-
क्तांबर दंडधारी कहिये. वृषके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्री तनु
दीन कुंचितकेश स्थूलोदरी जलावस्त्र पहिरे, द्वितीयमें
पुरुष काला सहि लांगल शकटमणि कुशल,तृतीयमें बडे
पाँच पुरुष कहिये. मिथुनके प्रथमके द्रेष्काणमें स्त्री स-
हितही निपटही रजस्वला गहिने सहित होय, दूसरे पु-
रुष वनमें स्थित कवचधारी धनुषपाणी जानिये, तीसरे
पुरुष रत्नभूषित पंडित धनुष हाथमें कहिये, कर्कके प्र-
थममें पुरुष हाथी समान शरीर शूकरमुख, दूसरे यौवन
वती युवा पुरुष वनमें रहिवेवारो सुवर्णभूषण सहित
पुरुष जानिये. सिंहके प्रथम द्रेष्काणमें पत्नीसंस्कार
गृहजंबुक वराह कुक्कुर कहिये. द्वितीयमें पुरुष धनु कु-
टिल केश दंड हस्तमें जानिये.कन्या स्त्री प्रथममें मली-
नवस्त्र द्वितीये पुरुष लेखनी हस्तमें अतिरोग धनुषपा-
णी तृतीय उन्नत गंड ऊंचे कंधे रेशमीवस्त्र पाटांवर

तुला प्रथममें तुला हस्तमें पुरुष वीथ्यापण मत्त उन्नत हस्त भांड चिंतनकरे क्षुधार्त आतुरवेग होय कलश- बडा मुख होय गृध्रमुख होय तृतीय पुरुष दग्धमुखादि दृष्टि धनुषपाणि. वृश्चिक प्रथम स्त्री लग्न स्थान- च्युत सर्प वृश्चिक पाद मनोहरणी द्वितीये स्त्री भर्तृकते भुजंगावर्त्तशरीर मुखकी वांछित तृतीये पुरुष चिप- टामुख होय अथ धनु प्रथम धनुष्पाणी द्वितीये गौरवर्ण पुरुष तृतीये दंडहाथ जानिये. मकर प्रथमे रोम- स्थूल दाँत बडे द्वितीये स्त्री श्मामावर्ण गहिने सहित तृतीये पुरुष श्याम वर्णजानिये. कुम्भ प्रथमे पुरुष गृध्र तुल्य मुख कमलसहित द्वितीये पुरुष गौरवर्ण तृतीये पुरुष श्यामवर्ण कहिये. मीन प्रथमे पुरुष नौका स्थित द्वितीये गौरवर्ण पुरुष तृतीये द्रेष्काणे पुरुष लग्ने भीतिसहित समर्याद भटांग जानिये. अथ ' कालदिग्देशा ' इति । मेष, वृष, मिथुन, कर्क,

मकर, धन लग्न होयँ तो रात्रि समय जानिये. वृष, कन्या मकर विषे दक्षिणदिशा कहिये. मिथुन, तुला, कुम्भसे पश्चिम; कर्क, वृश्चिक, मीनसे उत्तर और प्रश्नकालमें मेषलग्न होय तो मेषका प्रचार भूमिका कहिये. वृषमें गोकुलादिस्थान, मिथुनमें गीत नृत्यादि स्थानमें अथवा एकांतके स्थानमें कहिये, कर्कमें नालासमीपमें, सिंहलग्नमें वनकी भूमिमें, कन्या विषे नौका वा क्रीडास्थानमें, तुलाविषे ग्रामभूमिमें, मकर विषे अपनेही स्थानमें, वृश्चिकमें ग्राममें वनस्थानमें, धनुविषे कुंभमें नदीके निकटमें शिल्पगृहमे भांडके समीप स्थान कहिये तहां प्रश्नकालके लग्नसे चोरकी अवस्थाका प्रमाण कहना और जो चंद्रमा लग्नका स्वामी होय तो बालक कहिये और मंगल होय तो ब्रह्मचारी बारहवर्षका जानिये और शुक्र होय तो यौवनसहित षोडशवर्षकी अवस्था कहिये और बृहस्पति लग्नाधिपति होय

तो तीसवर्षका वय कहिये सूर्य होय तो वृद्ध पचासवर्षके ऊपर जानिये और सत्तरवर्षसे अधिककाभी जानिये (अथ स्वामिनां लग्नज्ञानमाह) तहां शुक्र बृहस्पति लग्नाधिपति होय तो ब्राह्मण जानिये और सूर्य मंगल होय तो क्षत्रिय जानिये और चंद्रमा होय तो वैश्य जानिये और बुध होय तो शूद्र जानिये और शनैश्चर होय तो वर्णसंकर जाति जानिये. हीन वर्णभी जानिये यह सब बातें अपनी बुद्धिके बलसे विचार करना योग्य है ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यात्मजपृथुयशोविरचितायां षट्पञ्चाशिकायां रामकृष्णशर्मकृतायां सुबोधिनीटीकायां,
मिश्राध्याय-सप्तमःसमाप्तः ॥ ७ ॥

विश्वं येन ततं चराचरमिदं सर्वार्थदं सर्वगं ।
यं ध्यायन्ति सदाजना हृदिमुदा स्वाभीष्टसिद्ध्यै विभुम्
वन्दे तं करुणानिधिं स्वगिरमा श्रीरामकृष्णं प्रभुं ।

प्रारंभे निर्जनिर्मितिप्रसृतये श्रीरामकृष्णो द्विजः॥ १ ॥
चैनाचन्द्रोऽर्गलपूरे न्यवसद्ब्राह्मणोत्तमः ॥
तस्यात्मजो रामलालो रामकृष्णस्तदात्मजः ॥ २ ॥
षट्पंचाशिकाग्रंथस्य टीका भावार्थबोधिनी ॥
अबोधानां सुबोधाय नृगिरा रचिता मया ॥ ३ ॥

॥ इति षट्पञ्चाशिका संपूर्णा ॥

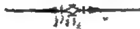


खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बंबई.

श्रीः

अथ षट्पञ्चाशिका।

संस्कृतटीकासहिता।



श्लोक—केशाजार्कनिशाकरान्क्षितिजविज्जीवास्फुजित्सूर्यजान्विघ्नेशंस्वगुरुंप्रणम्यशिरसादेवींचवागीश्वरीम् ॥ प्रश्नज्ञानवतोवराहमिहिरापत्यस्यसद्वस्तुनोलोकानांहितकाम्ययाद्विजवरष्टीकांकरोत्युत्पलः ॥ १ ॥

प्रणिपत्यरविंमूर्ध्नावराहमिहिरात्मजेनपृथुयशसा ॥ प्रश्नेकृतार्थगहनापरार्थमुद्दिश्यसद्यशसा ॥ १ ॥

टीका—कानीहशास्त्रेसंबंधाभिधेयप्रयोजनानिभवंतीत्युच्यते आब्रह्मादिविनिश्चितमिदंवेदांगमितिसंबंधः लग्नमहोरात्रेष्काणनवांशसप्तांशकादिनाग्रहसंस्थानदर्शनेनचजयपराजयलाभालाभहतनष्टादिपरिज्ञानमभिधेयम्

न्यत्रशुभाशुभकथनादिहलोकपरलोकसिद्धिरितिप्रयोजनम् ॥ किमेभिरुक्तैरित्युच्यते सर्वस्यैवहिशास्त्रस्यकर्मणोवापिकस्यचित् ॥ यावत्प्रयोजनंनोक्तंतावत्केननगृह्यते ॥ कस्यास्मिन्शास्त्रेऽधिकारः उच्यते द्विजस्यैव यतस्तेनषडंगोवेदोऽध्येतव्योज्ञातव्यश्च कान्यंगानीत्युच्यते शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंज्योतिषांगतिः॥ छंदसांलक्षणंचैवषडंगोवेद उच्यते इति सतामयमाचारोयच्छास्त्रस्यारंभेप्वभिमतदेवतानमस्कारंकुर्वंतितदयमपि आवंतिकाचार्योद्विजोवराहमिहिरात्मजःपृथुयशाः संक्षिप्तांप्रश्नविद्यांस्वसूत्रैः कर्तुकामः आदावेवभगवतः श्रीसूर्यस्यनमस्कारंस्वनामास्यापनंचप्राह प्रणिपत्येति वराहमिहिराख्यस्याचार्यस्यआत्मजेनपुत्रेणपृथुयशसा पृथुयशाइत्यभिधानं यस्य तेन रविंसूर्यं मूर्ध्नाशिरसा प्रणिपत्यनमस्कृत्यप्रश्नेप्रश्नविषये इयंप्रश्नविद्याकृतारचिता कीदृशीअर्थगहना अर्थोभिधेयंगहनोगुह्यो यस्याः साअर्थगहना किमर्थम् परार्थमुद्दिश्य परेषांलोकानामर्थः परार्थमुद्दिश्याभिधाय कीदृशेनपृथुयशसा

सयशसा सत्शोभनंयशःकीर्तिर्यस्य तथाभूतेनविद्याशौ-
र्यादिगुणयुक्तेनेत्यर्थः ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासो-
ऽस्तमयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यंग्रहैःप्रश्नविलग्न-
कालाद्गृहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासी ॥ २ ॥

टीका—अधुनालग्नचतुर्थसप्तमदशमानांचतुर्णांस्था-
नानांविचारप्रविभागमाह च्युतिर्विलग्नेति च्युतिःच्यवनं
स्थानपरिभ्रंशः विलग्नात्तात्कालिकात्पृच्छालग्नात् च्युति
र्ज्ञेया पृच्छांपृच्छति अमुकस्थानान्मेच्युतिर्भविष्यतिवा
नेत्येतत् विलग्नात्ज्ञेयम् एवंहिबुकाच्चतुर्थस्थानात् गृहसु
हृत्सुखानांवृद्धिर्ज्ञेया मध्यंदशमस्थानंतस्मात्प्रवासोज्ञेयः
प्रवसनंप्रवासःअन्यदेशगमनम् अस्तमयात्सप्तमस्थाना-
न्निवृत्तिःप्रवासान्निवर्तनम् कथमेवमुच्यते चरस्थिरद्वि-
स्वभावात्मकत्वेन यतउक्तम् प्रश्नविलग्नकालात् प्रश्नःपृ-
च्छा प्रश्नेविलग्नंप्रश्नविलग्नंतस्यकालःसमयस्तस्मात् तेन
चरराशौलग्नगतेस्वामिनायुतेदृष्टेवाशुभग्रहाणामन्यतमे-

नवायुतेदृष्टे परिशिष्टग्रहसंयोगसंदर्शनरहितेच्युतिर्भवति अन्यथानभवत्येव यतउक्तम् वाच्यंग्रहैःकारणभूतैः वाच्यंवक्तव्यंसर्वमेवैतत् एवंस्थिरराशौपापग्रहदर्शनयोगर हितेपिनभवत्येव यतोवक्ष्यति वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वि- द्विस्थानंगमागमौनस्तइति तथाद्विस्वभावेभवतिनवा स्वामिशुभग्रहदर्शनाधिक्यात्पापानामल्पत्वाचभवति अ- न्यथानभवत्येव एवंचतुर्थस्थानस्यसामान्यतयैवशुभग्र- हस्वामिदर्शनयोगाद्गृहादीनांवृद्धिः अन्यथाऽपचयः अ- थोप्रवासः दशमस्थानस्यचरराश्यात्मकत्वात् पाप- ग्रहदर्शनात्प्रवासः अन्यथास्वामिशुभग्रहदर्शनयोगा- चनप्रवासः सप्तमस्थानस्यचरराश्यात्मकत्वात् पापग्र- हदर्शनान्नप्रवासान्निवृत्तिः अन्यथास्वामिसौम्यगृहदर्श- नयोगाचनिवृत्तिः गृहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासी हिबुकेचतुर्थ- स्थानेप्रवासीविदेशस्थोनरोगृहंवेश्मप्रविष्टोनवेतिवक्तव्यं चतुर्थस्थानेस्वस्वामिदृष्टेयुक्तेवागृहंप्रविष्टोऽन्यथानप्रवि- ष्टइति हिबुकेग्रहेप्रविष्टेगृहप्रविष्टंप्रवासिनंविद्धि हिबुका-

स्तमयांतरंगेग्रहेचपथिवर्ततेपुरुषइति तस्यप्रविष्टस्य यावंतिदिनानिव्यतीतानितावंत्येवगृहंप्रविष्टस्यप्रवासिनो गतानि अथवायावद्भिर्दिनैःसग्रहश्चतुर्थस्थानेयास्यति तावद्भिरेवप्रवासीगृहंप्रविश्यति एतद्दूरगतस्यगमनंचेत् यस्मिन्वक्ष्यमाणेयातेसतिवक्तव्यम् नान्यथेति एतच्च पुरस्ताद्विस्तरेणाभिधीयतइति ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टोयुतोवासौम्यैर्वास्या-
त्तस्यतस्यास्तिवृद्धिः ॥ पापैरेवंतस्यभा-
वस्यहानिर्निर्देष्टव्यापृच्छतांजन्मतोवा ॥३

टीका—अधुनातन्वादीनांद्वादशभावानांशुभाशुभज्ञान-माह योयोभावइति तनुधनसहजसुहृत्सुतरिपुजायामृत्यु-धर्मकर्मायव्ययाइतिद्वादशभावाउक्ताः कुजशुक्रज्ञेंद्व-र्कज्ञशुक्रकुजजीवसौरियमगुरवः इतिराश्यधिपाउक्ताः तथा क्षीणेंद्वर्कयमाराःपापास्तैःसंयुतःसौम्यइतिग्रहाणां पापसौम्यत्वमुक्तम् तथा दशमतृतीयेनवपंचमे चतुर्थाष्टमेकलत्रंचपश्यंतिपादवृद्ध्याफलानिचैवंप्रयच्छंति

मेतद्दृष्टिफलमुक्तं तेनपृच्छासमयेयःकश्चिद्भावस्तन्वादिकःस्वामिनात्मीयनाथेनदृष्टोऽवलोकितस्तस्यभावस्य वृद्धिरुपचयोस्तिविद्यते अथवा तेनैवस्वामिनायुतः संयुक्तस्तस्यापिवृद्धिरस्ति सौम्यैर्वास्यात् सौम्यग्रहाणां बुधगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणामन्यतमेनवायुतोदृष्टोवाभावः स्याद्भवेत् तस्यापिवृद्धिरस्तिवर्द्धनंवक्तव्यम् पापैरेवमिति एवमनेनप्रकारेणपापैःपापग्रहैरपि रविक्रूरयुतबुधभौमसौरिक्षीणचंद्राणामन्यतमेनयोयोभावोयुक्तोदृष्टोवातस्य भावस्यहानिरपचयोनिर्देष्टव्यावक्तव्या कस्मादिति तदेवाह पृच्छतांजन्मतोवेति पृच्छतांपृच्छासमयेनराणां जन्मतोवाजायमानानां तथाचोक्तंजातके पुष्णंति शुभाभावांस्तन्वादीन्घ्नंतिसंस्थिताः । पापाः सौम्याःपष्ठेरिष्फाःसर्वेनेष्टाव्ययाष्टमगाः इति जन्मन्याधानकालेप्रश्नकालेवेति ॥ ३ ॥

सौम्येविलग्नेयदिवास्यवर्गेशीर्षोदयेसिद्धिमुपैतिकार्यम् ॥ अतोविपर्यस्तमसिद्धिहे-

तुःकृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका–अधुनाप्रश्नसमयेलाभादौशुभाशुभज्ञानमाह सौम्यइति सौम्यानांशुभानांग्रहाणांबुधगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणामन्यतमेविलग्नेस्थितेयदिवास्यसौम्यग्रहस्यवर्गेतत्कालंविलग्नेभागेगृहहोराद्रेष्काणनवमभागद्वादशांशकत्रिंशःवर्गःप्रत्येतव्योग्रहस्ययोयस्यविनिर्दिष्टइतिवर्गलक्षणमुक्तम् अथशीर्षोदयेपृच्छा लग्नेमेषाद्याश्चत्वारःसधन्विमकराःक्षपाबलाज्ञेयाः पृष्ठोदयाविमिथुनाशिरसान्येशुभयतोमीनः इतिराशिपृष्ठोदयत्वंशीर्षोदयत्वंचोक्तम् एतेषामन्यतमेयदिविलग्नेपृच्छतोभवतितत्कार्यंसिद्धिंसाध्यनामुपैतिगच्छति अतोविपर्यस्तमिति अतोऽस्मात्पूर्वोक्ताद्विपर्यस्तंविपरीतमस्ति असिद्धिहेतुरसाध्यतायाःकारणम् एतदुक्तंभवति पापग्रहेणविलग्नस्थेनपापवर्गेवाविलग्नगतेपृष्ठोदयेचालग्नगतेप्रष्टुःकार्यंनसिद्ध्यति कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रं तत्पूर्वोक्तंविमिश्रितंसंकीर्णंयदिभवेत्तदाप्रष्टुःकृच्छ्रेणक्लेशेनसंसिद्धिकरंकार्यसाधकंभवति एतदुक्तंभवति पापसौम्यौ

द्वावपिलग्नस्थौभवतः पापसौम्यौवर्गस्थौवाउभयोदयो मीनोवाशीर्षोदयःपापयुक्तःपापवर्गस्थोवापृष्ठोदयःसौम्ययुक्तःसौम्यवर्गस्थोवा उभयोदयोवातदाक्लेशेनसिद्धिर्भवति तत्रचबलाधिक्यान्निश्चयइति ॥ ४ ॥

होरास्थितःपूर्णतनुःशशांकोजीवेनदृष्टोय
दिवासितेन ॥ क्षिप्रंप्रनष्टस्यकरोतिलब्धि
लाभोपयातोबलवाञ्छुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—अधुनानष्टलाभज्ञानमाह होरास्थितइति शशांकश्चंद्रःपूर्णतनुःपरिपूर्णमंडलः दशमीमारभ्यकृष्णपञ्चमीयावत् पूर्णतनुर्भवति तथाचयवनेश्वरः मासेचशुक्लप्रतिपत्प्रवृत्तेःपूर्णःशशीमध्यबलोदशाहे।श्रेष्ठोद्वितीयेल्पबलस्तृतीयेसौम्यैस्तुदृष्टोबलवान्सदैव ॥एवंपूर्णतनुःशशांकःहोरायांलग्नेस्थितःहोरेतिलग्नंभवनस्यचार्द्धमिति लग्नस्यहोराव्यपदेशः तत्रस्थःशशीजीवेनगुरुणादृष्टोऽवलोकितोयदिवासितेनशुक्रेणदृष्टोभवति यदिवेत्ययंनिपातोविकल्पे क्षिप्रमाशुप्रनष्टस्यापहृतस्यद्रव्यादेर्लब्धिलाभंक-

रोति लाभोपयातइति अथवा शुभःसौम्यग्रहःबलवान् वीर्ययुतोलाभेएकादशस्थानेउपयातःप्राप्तोभवति तथापि चशब्दात्क्षिप्रमेवनष्टस्यलब्धिंकरोतीति ग्रहाणांस्थानदिक्चेष्टाकालबलंजातकेप्रोक्तम् बलवान्मित्रस्वगृहोच्चैरित्यारभ्यस्वदिनादिष्वशुभशुभाइत्येतदंतम् ॥ ५ ॥

स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितःप श्यतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरोति जीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—अधुनाहृतनष्टमुष्टिगतचिंतितानां धातुमूलजीवानांपरिज्ञानमाह स्वांशेति यःकश्चिद्ग्रहस्तत्कालंस्वांशेआत्मीयनवांशकेस्थितःविलग्नेप्रश्नलग्नेतत्कालोदितंस्वांशंतस्यैवग्रहस्यात्मीयंनवांशकं तच्चपश्यत्यवलोकयतितदाप्रष्टुःधातुचिंतांवदेत् सुवर्णादिमृत्तिकांतंधातुद्रव्यम् एतदुक्तंभवति स्वांशकस्थोग्रहःस्वांशकयुक्तंलग्नंपश्यति तदाधातुचिंतांप्रवदेत्अथवालग्नगतंस्वांशंनपश्यतितदा।त्रि

स्वांशंपश्यतिनवमस्थानंपंचमस्थानंवास्वांशकसमेतंपश्य-
तीत्यर्थः यतोलग्नपंचमनवमानामेकएवांशस्तुल्यकालमु-
देति एतदुक्तंभवति स्वनवांशकस्थोग्रहोलग्नपंचमनवमा-
नामन्यतमंस्वांशकयुक्तंपश्यति तदाधातुचिंतांवदेत् तत्रा
पिधाम्याधाम्यप्रविभागोग्रहांशकवशाद्वाच्यः पापग्रहां-
शकमवस्थितस्यधाम्यम् सौम्यग्रहांशकसमवस्थितस्या-
धाम्यमिति परांशकस्थस्तुकरोतिजीवमिति यःकश्चि
द्ग्रहः परनवांशकस्थोऽन्यग्रहनवभागावस्थितोविलग्नगतं
स्वांशंपश्यति त्रिकोणयोरन्यतमगतंवा तदाजीवचिन्तां-
वदेत् पुरुपादिसरीसृपांतोजीवः तत्रादिग्रहयुक्तनवांशक-
वशात्द्विपदसरीसृपादिविभागः मिथुनकन्यातुलाधनुः-
पूर्वार्धकुंभादेवानराः पक्षिणश्चद्विपदाज्ञेयाः मेषवृषसिंहध-
न्विपरार्धाश्चतुष्पदाः कर्कवृश्चिकमकरमीनाः सरीसृपाः
तत्रमीनोह्यपदः अन्येतुबहुपदाः मूलंपरांशोपगतः परां-
शमिति यःकश्चिद्ग्रहः परांशोपगतोऽन्यग्रहनवांशकम-
वस्थितोविलग्नगतं परनवांशकं त्रिकोणयोरन्यतमगतं

वापश्यतितदामूलंकरोति मूलचिंतांप्रवदेत् एतद्यतःप्रायः संभवतितद्ग्रहदर्शनाज्ज्ञेयम् वृक्षादितृणांतंमूलं तत्रापिग्रह युक्तनवांशकवशात्स्थलजलत्वंज्ञेयं कर्कमकरमीनाःजलजाः अन्येतुसर्वेस्थलजाइति तथाचचिंतासिद्धिप्रश्नज्ञान मुक्तंस्वांशेस्थितोविलग्नेयदाग्रहःस्वांशकंनिरीक्षेत धातोस्तदानुचिंतांकरोति परसंस्थितोजीवंपरभागसन्निविष्टः परांशकंप्राग्विलग्नमायातम् पश्यतिमूलंप्रवदेदेवंनवपंचमेज्ञेयम् ॥ ६ ॥

धातुंमूलंजीवमित्योजराशौयुग्मेविंद्यादेत-
देवप्रतीपम् ॥ लग्नेयोंशस्तत्क्रमाद्गण्यएव
संक्षेपोऽयंविस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां
षट्पंचाशिकायां होराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

टीका—एतदेवपुनरपिप्रकारांतरेणाह धातुमिति मेषमिथुनसिंहतुलाधनुःकुंभाःओजराशयः वृषकर्ककन्यावृश्चिकमकरमीनायुग्मराशयः

प्रथमनवांशकोदयेधातुंप्रवदेत् द्वितीयेमूलं तृतीयेजीवं पुनरपिचतुर्थेधातुं पंचमेमूलं षष्ठेजीवं पुनःसप्तमेधातुम् अष्टमेमूलं नवमेजीवमिति युग्मेविंद्यादेतदेवप्रतीपम् युग्मेयुग्मराशौ लग्नगतेनवांशकक्रमेणैतदेवपूर्वोक्तंप्रतीपंविपर्ययेणविंद्यात्जानीयात् तेनप्रथमनवांशकोदयेजीवं द्वितीयेमूलं तृतीयेधातुं पुनश्चतुर्थेजीवं पंचमे मूलं षष्ठेधातुं पुनःसप्तमेजीवम् अष्टमेमूलं नवमेधातुमिति एवमनेनप्रकारेण क्रमात्परिपाट्यालग्नेविलग्नेयोंशोयोनवभागस्तत्कालमुदितः सयावद्रव्ययोगणनीयः अत्रचलग्ननवांशकवशात्प्राग्वद्योनिविभागः केचित्द्रेष्काणत्रितयेयथासंख्यंधातुंमूलंजीवमित्योजराशौयुग्मेविंद्यादेतदेवप्रतीपमितिवर्णयंति तच्चायुक्तम् यस्मात्पुरस्तादाचार्य एववक्ष्यति अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यमिति अयंसंक्षेपःसमासउक्तः विस्तराद्व्यासेनास्यैवार्थस्यप्रभेदःस्पष्टताअभिधीयतइति ॥ ७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकायां होराविवृतौसंक्षेपाद्धोराध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धिस्थानंगमागमौन
रस्तः॥नमृतंनचापिनष्टंनरोगशांतिर्नचाभि-
भवः ॥ १ ॥ तद्विपरीतंतुचरैर्द्विशरीरैर्मि-
श्रितंफलंभवति ॥ लग्नेंद्रावेकव्यंशुभदृ-
ष्ट्याशोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—अथातोगमागमाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावे-
वस्थानगमागमजीवितमरणरोगशांतिपराभिभवज्ञानमाह
वृषसिंहेति वृषसिंहवृश्चिकाःप्रसिद्धाः घटःकुंभःएतेस्थिर-
राशयः एतैर्वृषसिंहवृश्चिकघटैः एतेषामन्यतमेलग्नेप्राप्ते
स्थानंविद्धि जानीहि प्रष्टुःस्थानलाभोभवति गमागमौन-
रस्तः गमश्चागमश्चागमागमौतौनरस्तः नभवतः नमृतंमरणं-
नभवतिजीवत्येव नचापिनष्टं धात्वादिद्रव्यंधनम् अदर्शन-
पथिस्थितंननष्टंननाशंप्राप्तम् अथवाविदेशस्थोनररस्तस्मा-
त्स्थानान्ननष्टःअन्यदेशंनगतः नरोगशांतिःरोगोज्वरादिः
तस्यशांतिःशमनंव्याध्यभिभूतस्यनभवति नचाभिभवः
अभिभवःपराजयः सशत्रोःसकाशान्नभवति ॥

तद्विपरीतंतुचरैरिति चराःमेषकर्कटतुलामकराः तदि-
त्यनेनानंतरोक्तं विद्धिस्थानमित्यादिकंसर्वमत्यवमृश्यते
चरैःचराभिधानैःपृच्छालग्नस्थैस्तत्फलमनंतरोक्तंविपरीतं
विपर्ययाद्भवति पूर्वमुक्तंविद्धिस्थानमिति तत्रचरैःस्थान-
प्राप्तिर्नास्तीतिवाच्यागमागमोनस्तइतिपूर्वमुक्तं चरैर्गमा-
गमोविद्येते पूर्वमुक्तंनमृतः चरैर्मृतइतिवक्तव्यं पूर्वमुक्तं-
नचापिनष्टं चरैर्नष्टमितिवाच्यं पूर्वमुक्तंनरोगशांतिः च-
रैःरोगशांतिर्भवतीतिवाच्यं पूर्वमुक्तंनचाभिभवः चरैर-
भिभवोभवतीतिवक्तव्यम् द्विशरीरैर्मिश्रितंफलंभवति
इति द्विशरीराः द्विस्वभावाः मिथुनकन्याधन्विमीनाः
तैःपृच्छालग्नैर्मिश्रितंफलंभवति यत्स्थिरैरुक्तंयच्चरैरुक्तं
तन्मिश्रितमुभयंफलंभवति भवतिनभवतीतिवासर्वमेतय-
थोद्दिष्टम् तत्रायंनिश्चयः द्विस्वभावलग्नेप्रथमेर्द्धेस्थिर-
वत्फलंसर्वंवदेत् द्वितीयेर्द्धेचरवत् यतस्तस्यप्रथमार्द्धं
स्थिरसमीपवर्तिद्वितीयंचरसमीपवर्तीति तथाचास्मदीये
प्रश्नज्ञाने स्थिरराशौलग्नगतेस्थानप्राप्तिंवदेन्नचागमनम्

रोगोपशमोनाशोद्रव्याणांस्यात्पराभवोनात्र चरराशौ-
विपरीतंमिश्रंवाच्यंद्विमूर्त्युदये स्थिरवत्प्रथमेर्द्धेस्यादपरे
चरराशिवत्सर्वमितिलग्नेंदोर्वक्तव्यमिति लग्नंप्रश्नलग्नम्
इंदुश्चंद्रस्तयोर्लग्नेंद्वोर्द्वयोरपि शुभदृष्टयासौम्यग्रहदर्शनेन-
शोभनंफलंवक्तव्यम् देहमतोरूपत्वात् लग्नेंदूसौम्यदृष्टौ
संपत्करौभवतः अतोन्यदिति अतोस्मादुक्ताद्विपरीतेन्य-
दशुभंवक्तव्यं तेनलग्नेंदूपापदृष्टौयदिभवतस्तदासर्वपृच्छा
स्वशोभनंफलंवक्तव्यम् अर्थादेकैकस्मिन्नुभयदृष्टेमध्य-
मंफलंभवति ॥ २ ॥

सुतशत्रुगतैःपापैःशत्रुर्मार्गान्निवर्तते ॥
चतुर्थगैरपिप्राप्तःशत्रुर्भग्नोनिवर्तते ॥ ३ ॥

टीका—अधुनाशत्रोर्मार्गनिवृत्तिज्ञानमाह सुतशत्रुगतै-
रिति सुतश्चशत्रुश्चसुतशत्रू अनयोर्गतैःसुतस्थानंपंचमं रि-
पुस्थानंषष्ठम् अनयोर्द्वयोरपिस्थानयोःएकस्मिन्वापापैः
सूर्यभौमशनिभिःप्रश्नलग्नाद्गतैःसमवस्थितैःप्रष्टुः शत्रुःरि-
पुर्मार्गात्पथःनिवर्ततेगच्छति तैरेवपापै-

समवस्थितैः अपिशब्दःसम्भावनायां प्राप्तोपिशत्रुर्निकट स्थोभग्नःपराजितोनिवर्ततेप्रतीपंगच्छतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

झपालिकुंभककर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥
रिपोःपराजयस्तदाचतुष्पदैःपलायनम् ॥ ४ ॥
चरोदयेशुभःस्थितःशुभंकरोतियायिनाम् ॥
अशोभनैरशोभनंस्थिरोदयेपिवाशुभम् ॥५॥

टीका—अथान्ययोगांतरमाह झपेति झपोमीनःअ- लिर्वृश्चिकःकुंभकर्कटौप्रसिद्धौ एतेरसातलेलग्नाच्चतुर्थस्था- नेस्थिताएतेषामन्यतमः प्रश्नलग्नाच्चतुर्थस्थानेयदासमव- स्थितोभवतितदारिपोःशत्रोःपराजयोऽभिभवोभवति च- तुष्पदैःपलायनमिति मेषवृषसिंहधन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः एतेषामन्यतमेलग्नाच्चतुर्थस्थेशत्रोःपलायनमपसर्पणंभवती त्यर्थः॥ ४ ॥ अथयायिनांप्रतिशुभाशुभमाह चरोदय इति चरोदयेचरराशुदमेतस्मिश्चशुभग्रहाणांबुधजीवशुक्राणां अन्यतमःस्थितश्चेत् यायिनांगच्छतांशुभंश्रेयःकरोति विदधाति तस्मिन्नेवचरोदयेअशोभनैःस्थितैःपापग्रहाणां

रविभौमार्कजानामन्यतमेस्थितेतेषामेवयायिनामशोभन-मश्रेयःकरोति स्थिरोदयेपिवाशुभम् स्थिराणामन्यत-मस्योदयेपापसंयुक्ते विकल्पेनशुभंभवति तत्स्थानंपापग्र हस्यस्वक्षेत्रम् उच्चंमूलत्रिकोणंमित्रक्षेत्रंवाभवति तदाशुभ मन्यथानशुभमित्यर्थः केचित्स्थिरेऽष्टमेऽपिवाशुभमिति पठंति स्थिरराशौलग्नाष्टपापसंयुक्तेवाशुभंप्राग्वदिति॥५॥

स्थिरेशशीचरोदयेनचागमोरिपोर्यदा ॥
तदागमंरिपोर्वदेद्विपर्ययेविपर्ययम् ॥ ६ ॥
स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचन्द्रमाः ॥
निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोऽपिसन्॥७॥
चरेशशीलग्नगतोद्विदेहःपथोर्धमागत्यनिव-र्ततेरिपुः॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्यात्परा जयःस्यादशुभेक्षितेतु ॥ ८ ॥

टीका–अथ शत्रोर्गमागमज्ञानमाह स्थिरेशशीति स्थिरेस्थिरराशौशशीचन्द्रोभवति चरोदयेचरराशौलग्न तेप्रश्नलग्नेप्रश्नकालेयदारिपोःशत्रोर्नचागमः ऽ।

विद्यतेतदातस्मिन्नेवप्रश्नेरिपोरागममागमनंवदेद्ब्रूयात् वि पर्यये विपर्ययमिति अस्मादेवपूर्वोक्ताद्विपर्ययेअन्यथात्वेवि पर्ययंविपरीतमेववक्तव्यं एतदुक्तंभवति चरेशशिनिस्थि रराशौ लग्नगतेयदिरिपोरागमनंश्रूयते तदातस्मिन्प्रश्नेना- गच्छतीतिवदेत् ॥ ६ ॥ अथशत्रुनिवृत्तिज्ञानमाह स्थिरे- त्विति स्थिरराशौलग्नमागते तत्काललग्नप्राप्तेद्विरात्मके- द्विस्वभावे राशौयदाचन्द्रमाःशशीभवति तदारिपुःशत्रुः सुदूरमागतोऽपिसन्स्वस्थानात्सुतरांदूरमागतोऽपिनिव- र्ततेप्रतीपंगच्छतीति अपिशब्दःसम्भावनायाम् ॥ ७ ॥ अ- थान्ययोगान्तरमाह चरेशशीति चरेचरराशौशशी चंद्रमाभवति तथालग्नगतःप्राग्लग्नस्थोद्विदेहोद्वि स्वभावो राशिर्यदातस्मिन्कालेपथोमार्गस्यार्धमागत्यनिवर्ततेप्रती- पंगच्छति तुशब्दोऽवधारणे विपर्ययइति विपरीतेशत्रोराग मनंद्विप्रकारेणस्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति द्विस्वभावराशि स्थेशशिनि चरराशौलग्नगतेशत्रोरागमनंचलवन्नभवेत् पराजयःस्यादशुभेक्षितेत्विति तस्मिन्नेव विपरीतेयोगे

विपरीतेचंद्रलग्नेवाशुभेक्षितेपापग्रहसंदृष्टेशत्रोःसकाशात्प्र ष्टुःपराजयोऽभिभवः स्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति द्विस्वभावराशिस्थितेशशिनि चरराशौलग्नगतेद्वयोरपिपापदृष्टयाशत्रोरागमनंद्विधाभवति समागमश्चपराजयंकरोतीत्यर्थः ॥ ८ ॥

अर्कार्किज्ञसितानामेकोपिचरोदयेयदाभवति ॥ प्रवदेत्तदाशुगमनंवक्रगतैर्नैतिवक्तव्यम् ॥ ९ ॥ स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेक्षिते गमागमौनैववदेत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचषष्ठा रिपुसंगमायपापाश्चतुर्थाविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका—अन्यदपिगमागमावाह अर्केति अर्कःआदित्यःआर्किःसौरिःज्ञःबुधःसितःशुक्रःएषांमध्येएकोऽपिग्रहोयदाचरोदयेचरराशौलग्नगतेस्थितोभवतितदाआशुक्षिप्रमेवयियासोर्गमनंवदेद्ब्रूयात् रविवर्ज्यमन्येषामेकतमोपियदाचराशौलग्नगतोभवतिसचवक्रगतैःप्रतीपगतिमाश्रितोभवति तदायियासोर्गमनंनेतिवक्तव्यम् यातः

च्छतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ अथयोगांतरमाह स्थिरोदयइति स्थिरराशौ लग्नगतेयस्मिंश्चजीवशनैश्चरेक्षितेबृहस्पतिसौरिभ्यांदृष्टेपृच्छतःप्रष्टुः गमागमौनैववदेत् ब्रूयात् शत्रुगमागमौनैवभवतइत्यर्थः तस्मिन्नेवजीवशनैश्चरेक्षिते पापाः पापग्रहाः त्रिपंचषष्ठास्तृतीयपंचमषष्ठस्थानस्थाभवंति तदारिपोःशत्रोःसंगमायभवंति प्रष्टुःशत्रुणासहसंयोगोभवतीत्यर्थः अस्मिन्नेवपूर्वोक्तयोगे पापाअशुभग्रहाः चतुर्थाश्चतुर्थस्थानस्थास्तस्यैवशत्रोर्विनिवर्तनाय प्रतीपगमनायभवंति शत्रुर्विनिवर्ततइत्यर्थः ॥ १० ॥

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवनस्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिबुकेयदातदाशीघ्रमायाति ॥ ११ ॥ मेषधनुःसिंहवृषायद्युदयस्थाभवंतिहिबुकेवा ॥ शत्रुर्निवर्ततेतदा ग्रहसहितावावियुक्तावा ॥ १२ ॥

टीका—अथान्यद्गमनागमनाययोगांतरमाह नागच्छतीति अर्कःआदित्यः चंद्रःशशी तौलग्नाद्यदाचतुर्थभवन-

स्यौचतुर्थस्थानगतौभवतः तदापरचक्रंनागच्छतिनाया-
ति शत्रुसमूहोनायातीत्यर्थः बुधगुरुशुक्राःहिबुकेचतुर्थ
स्थानेयदास्थितास्त्रवंति तदापरचक्रंशीघ्रमाशुआयाती
त्यर्थः ॥ ११ ॥ अथयोगांतरमाह मेषधनुरिति एषांमे-
षधनुःसिंहवृषाणांमध्येयेकतमउदयस्थस्तत्काललग्नग-
तोभवति वाइत्यथवा तात्कालिकात्प्रश्नलग्नाद्धिबुके
चतुर्थस्थानेएषांमध्यादन्यतमोभवति तेच ग्रहैःसहिताः
समेताःरहितावातदातस्मिन्नेवकालेशत्रुर्निवर्ततेमतीपंग-
च्छतीत्यर्थः ॥ १२ ॥

स्थिरराशौयद्युदयेशनिर्गुरुर्वास्थितस्तदा-
शत्रुः ॥ उदयेरविर्गुरुर्वाचरराशौस्यात्त-
दागमनम् ॥ १३ ॥ ग्रहःसर्वोत्तमवलोल-
ग्नाद्यस्मिन्गृहेस्थितः ॥ मासैस्तत्तुल्यसं-
ख्याकैर्निवृत्तिर्यातुरादिशेत् ॥ १४ ॥
चरांशस्थेग्रहेतस्मिन्कालमेवंविनिर्दिशेत्।

टीका—अन्यच्छत्रोरनागमनप्रकारमाह स्थिरराशाविति उदयेतत्काललग्नेस्थिरराशौतत्रैवशनिःसौरिःगुरुःजीवोवाभवति तदाशत्रुःरिपुःस्वस्थानाचलितः तत्रैव तिष्ठति अथवाचरराशौलग्नगतेतत्रच रविर्गुरुर्वाभवति तदाशत्रोरागमनं आगमःस्याद्भवेत् ॥ १३ ॥ अथ यातुर्निवृत्तिज्ञानार्थंयोगंश्लोकद्वयेनाह ग्रहेति सर्वोत्तमबलोग्रहःलग्नाद्यस्मिन्गृहेयावत्तमेस्थानेस्थितः सर्वेषामुत्तमबलःप्रधानबलोपेतःतत्तुल्यसंख्याकैस्तत्तुल्यात्तत्समासंख्याप्रमाणयेषांमासानांतैः यातुःजिगमिषोःनिवृत्तिर्निवर्त्तनंप्रवासान्निर्दिशेद्वदेत् ॥ १४ ॥ चरांशस्थइति तस्मिन्सर्वोत्तमबलेग्रहेचरांशस्थेचरराशिनवभागस्थेपूर्वोक्तकालमेवंविनिर्दिशेत् तत्तुल्यसंख्याकैर्मासैःस्थिरभागांशकस्थेस्थिरनवांशस्थेतमेवकालंद्विगुणंद्द्यात्मकांशकेद्विस्वभावनवांशकेतमेवकालंत्रिगुणंवदेत् ॥ १५ ॥

यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ॥
करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंप्रवदेत्परे ॥ १६॥

उदयर्क्षाच्चंद्रर्क्षंभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः ॥
आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् १७
इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचिता-
यांषट्पंचाशिकायांगमागमाध्या-
योद्वितीयः ॥ २ ॥

टीका—अत्रैवमतांतरमाह यातुरिति विलग्नंपृच्छालग्नं-तस्माज्जामित्रभवनंसप्तमस्थानंतस्याधिपतिः स्वामीसय-दायस्मिन्कालेवक्रंविपरीतंगमनंकरोतितंकालंयातुर्जिग-मिषोरावृत्तेरावर्तनस्यप्रवासान्निवृत्तिःभवति अपरेआ-चार्याःकृष्णादयोब्रुवतेकथयंति वक्रंचग्रहाणांयथासंभवं योज्यम् तथाचयातुःपृच्छालग्नात्सप्तमभवनाधिपोयदाव-क्रोभवति तदावक्तव्यः प्रवासनिवृत्तयेकालः ॥ १६ ॥
अथशत्रोरागमनेदिनप्रमाणमाह उदयेति उदयर्क्षमुदय-लग्नं चंद्रर्क्षंचंद्रराशिःपृच्छाकालेयत्रचंद्रमाःस्थितस्तस्मा दुदयर्क्षाचंद्रर्क्षंयावत्संख्यंभवति तावत्संख्यैर्दिनैःशत्रो-रागमनंस्यात् यदिमध्यइति त ् ं चंद्रयो ् ं

यदिकश्चिद्ग्रहोनभवतितदैवंग्रहसंभवेशत्रुरवश्यमेवनयातीत्यर्थः ॥ १७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकाविवृतौगमागमाध्यायोद्वितीयः ॥ २ ॥

दशमोदयसप्तमगाःसौम्यानगराधिपस्यविजयकराः ॥ आरार्किज्ञगुरुसिताःप्रभंगदाविजयदानवमे ॥ १ ॥ पौरास्तृतीयभवनाद्धर्माद्यायायिनःशुभैःशुभदाः ॥ व्ययदशमायेपापाःपुरस्यनेष्टाःशुभायातुः ॥ २ ॥

टीका—अथ जयपराजयाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेवजयपराजयज्ञानमाह दशमोदयेति उदये लग्ने दशमसप्तमेप्रसिद्धे एतेषुस्थानेषुलग्नात्सौम्याः शुभग्रहाः गताः समवस्थिताः पृच्छालग्नेनगराधिपस्यपुरस्वामिनोराज्ञो विजयकराः विशेषेण जयंकुर्वंति आरोभौमः आर्किः सौरिः एतौप्रश्नलग्नात् नवमेस्थानेस्थितौप्रष्टुः प्रभंगदौमकर्षेणभंगंपलायनंददतः तथाज्ञोबुधः

गुरुःजीवः सितःशुक्रः एतेलग्नान्नवमेस्थाने स्थिताः विजयदाःविशेषेणजयदाभवंति प्रष्टुःसंग्रामेविजयो भवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ अथ नगरयायिनः कस्यविजयोभवतीत्येतत्परिज्ञानमाह पौरास्तृतीयेति पुरेभवाः पौराःनागराःपृच्छालग्नातृतीयभवनप्रभृतियद्राशिपङ्कमष्टमंस्थानंयावत् तावन्नागराज्ञेयाः एतद्राशिपङ्क्तिपौराणांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः धर्माद्यायायिनः धर्मान्नवमस्थानात्प्रभृतिराशिपङ्क्तिद्वीतीयस्थानंयावत् तावत्स्थिताज्ञेयाः एतद्राशिपङ्क्तियायिनांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः येनादौयात्रायामुद्योगःकृतःसयायीयेनपश्चात्कृतः सनागरःवाशब्दोऽत्रचार्थेज्ञेयः शुभैःशुभदाः एतेयथाविभागकल्पिताराशयोयस्यशुभैः सौम्यग्रहैः संयुक्ताभवंति तस्य शुभदाभवन्तीत्यर्थः अर्थाद्यस्यपापैः संयुक्तास्तस्य पराजयदाः तथाचप्रश्नेधर्मादेश्चक्रदलेयायिनोनागरास्तृतीयादौविजयः सौम्ययुतेस्यात्पुरभागेक्रूरसंयुतेभंगः तथाचास्मदीयेप्रश्नज्ञानेनवमाद्येचक्रदलेविज्ञेयोयायि .

तीयादौ पोराः शुभसंदक्षाभागे विजयः पुरेभंगइति अर्था-
देवभागद्वयेपि पापसौम्यैर्युक्तेव्यामिश्रंफलंभवति नजयो
नपराजयइति व्ययदशमायेपापाइति व्ययंद्वादशंदशमंप्र-
सिद्धम् आयमेकादशंसमाहारेएकवद्भावः तत्रपापाः पा-
पग्रहाः पृच्छालग्नात्समवस्थिताभवंतितदापुरस्यनगरस्य
नेष्टाः नशुभाभवंति यातुर्यत्पुरंतस्यनशुभाः यातुः पुनः
शुभकराः उपचयकराइत्यर्थः ॥ २ ॥

नृराशिसंस्थाह्युदयेशुभाःस्युर्व्ययायसंस्था
श्चयदाभवंति ॥ तदाशुसंधिंप्रवदेन्नृपाणां
पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका—अथसंधिविरोधज्ञानार्थंयोगांतरमाह नृरा-
शीति नृराशयःपुरुषराशयः पुरुषाकृतयोराशयः नृरा-
शयःमिथुनकुंभतुलाकन्याः तथाआचार्यएवज्ञापकः तु-
लाथकन्यामिथुनोघटश्चनृराशयइति शुभाःसौम्यग्रहाःबु
धशुक्रबृहस्पतयः एतेउदयेपृच्छालग्नेस्थिताः स्युर्भवेयुः
[थवातएवसौम्यग्रहाः नृराशिसंस्थाव्ययायसंस्था-

भवंति व्ययंद्वादशम् आयमेकादशं चशब्दःसमुच्चये अनयोरपिसंस्थाःसमवस्थितायदाभवंति तदाआशुक्षिप्रमेवनृपाणांसंधिसंधानंप्रवदेद्ब्रूयात् पापैरिति पापारविभौमशनिक्षीणचंद्राः द्विदेहाःद्विस्वभावराशयः पापैरशुभग्रहैर्द्विदेहोपगतैर्द्विस्वभावराशिषुसमवस्थितैर्नृणामेवंविरोधं विग्रहंप्रवदेत् ॥ ३ ॥

केंद्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नगाःप्रीतिम् ॥ कुर्वंतिपापदृष्टाःपापास्तेष्वेवविपरीतम् ॥४॥द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुक्रौयदातदा ॥ आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीचन संशयः ॥ ५ ॥

इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायांषट्पंचाशिकायांजयपराजयो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका–योगांतरमाह केंद्रोपगताइति केंद्राणिलग्नतुर्यसप्तमदशमानि तेषूपगताः समवस्थिताः

शुभग्रहैः अथवातएवसौम्याःनूलग्नगाःनूराशिपुप्रागुक्केपुस्थिताःसौम्यैःशुभग्रहैश्वदृष्टाःपरस्परमवलोकयंतीत्यर्थः एवंविधाप्रीतिंसंधिंकुर्वंतिनिवृत्तिंप्रापयंति तेपुकेंद्रेपुसमवस्थिताःपापाःतेचपापदृष्टाः परस्परंपापैरवलोकिताःविपरीतंविपर्ययमप्रीतिंविग्रहंकुर्वंति ॥ ४ ॥ अथ सेनागमनज्ञानमाह द्वितीयेति प्रश्नलग्नाद्यदाद्वितीयेवायथातथागुरुशुक्रौजीवसितौभवतः तदाचमूः सेनाआश्वेवागच्छतिक्षिप्रमेवायाति प्रवासीअन्यदेशस्थः आश्वेवागच्छतिनसंशयः निर्विकल्पंयथास्यात्तथा ग्रहाणांक्रमविवक्षार्थम् कदाचिद्द्वावेवद्वितीयेवाद्वावेवतृतीयेवाएकोद्वितीयेवातृतीयेऽप्येकएवेति ॥ ५ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्पंचाशिकाविवृतौजयपराजयाऽध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

केंद्रत्रिकोणेपुशुभास्थितेपुपापेपुकेंद्राष्टमवर्जितेपु ॥ सर्वार्थसिद्धिंप्रवदेन्नराणांविपर्ययस्थेपुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥ त्रिपंचलाभा

स्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफलाश्चपापाः ॥ तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृराशयस्तेषुशुभंवदंति ॥ २ ॥

टीका—अधुनाशुभाशुभलक्षणाध्यायोऽन्याख्यायते तत्रादावेवप्रष्टुः शुभाशुभज्ञानमाह केंद्रेति केंद्राणि लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशमानि १० त्रिकोणसंज्ञेनवपंचमे शुभाः सौम्यग्रहाः केंद्रेषुत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुशुभाः स्थितायेषुसौम्यग्रहयुक्तेष्वित्यर्थः शुभान्वितेष्वितिपाठः तथापापेषुपापग्रहेषुकेंद्राष्टमस्थानंवर्जयित्वा अन्यत्रसमवस्थितेषुसत्सुनराणांमनुष्याणांसर्वार्थसिद्धिंवदेत् सर्वेषांनिःशेषाणामर्थानांसिद्धिं साधनंवदेद्ब्रूयात् विपर्ययइति एषुपापसौम्येषुविपर्ययेविपरीते अन्यथास्थितेषु विपर्ययोवैपरीत्यमेवस्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति यदापापाःकेंद्रत्रिकोणाष्टमेषुभवंति सौम्याःकेंद्रत्रिकोणाष्टमवर्ज्यमन्यत्रभवंति तदासर्वार्थानामसिद्धिंप्रवदेत् ॥ १ ॥ अधुनालाभालाभज्ञानमाह त्रिपंचेति तृतीयपंचमेस्थानेप्रसिद्धेलाभएका-

दशम् अस्तमयंसप्तमं एतेषु सौम्याः शुभग्रहाः प्रष्ठुर्लाभ-प्रदाः एष्वेवत्रिपंचलाभास्तमयेषु पापाअशुभग्रहाः नेष्ट-फला अनिष्टमशोभनंफलंकुर्वंति अर्थनाशं समारभंती-त्यर्थः तुलेति तुलाकन्यामिथुनाःप्रसिद्धाः घटःकुंभः एतेनरराशयःपुंराशयः एतेषुलग्नेषुसौम्यग्रहाधिष्ठितेषुशु भंभद्रंमुनयोवदंति कथयंतीत्यर्थः ॥ २ ॥

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्यामानार्थ-दाःस्वसुतलग्नगताभवंति ॥ पापान्यया यसहितानशुभप्रदाःस्युर्लग्नेशशीनशुभदो दशमेशुभश्च ॥ ३ ॥ इंदुद्विसप्तदशमा-यरिपुत्रिसंस्थंपश्येद्गुरुःशुभफलंप्रमदाकृतं स्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्चपापाः कार्यार्थनाशभयदाःशुभदाःशुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका—अन्ययोगांतरमाह स्थानप्रदाइति सौम्याः शुभग्रहाः लग्नाद्दशमेसप्तमेचस्थानेगताःसमवस्थिताःप्रष्टुः

तेषुस्थिताः सौम्याःमानार्थदाःस्युर्भवेयुः पापाव्ययेति पापाअशुभग्रहाः व्ययोद्वादशम् आयएकादशं तयोर्द्वयोः सहिताः नशुभप्रदाःस्युःभवेयुः नशुभफलंप्रयच्छंति लग्नइ-ति पापाइत्यनुवर्तते शशीचंद्रः पापोलग्नेस्थितोनशुभ-इति शुभफलंनददाति दशमेस्थानेसमवस्थितः पापरू-पोपिशुभफलोभवति श्रेयस्करोभवतीत्यर्थः॥ ३॥अन्य-च्चशुभाशुभज्ञानमाह इंदुमिति द्विशब्देनद्वितीयस्थानमु-च्यते सप्तमदशमेप्रसिद्धे आयएकादशं रिपुस्थानंषष्ठं त्रिशब्देनतृतीयस्थानमुच्यते एतेषुद्वितीयतृतीयसप्तमद-शमायारिपुत्रिषुसंस्थितः तमिंदुंचंद्रंगुरुर्जीवःपश्येत्तदा-प्रष्टुःशुभफलंलाभादिकंप्रमदाकृतंस्त्रीहेतुकंस्याद्भवेत् लग्न-त्रिधर्मेति लग्नंपृच्छालग्नं त्रिशब्देनतृतीयस्थानं धर्म-स्थानंनवमं सुतस्थानंपंचमं नैधनमष्टमं एतेषुस्थानेषु-पापाःपापग्रहगताःसमवस्थिताःप्रष्टुःकार्यार्थनाशभयदाः कार्यस्यकृत्यस्यअर्थस्यधनस्यनाशंविघातंभयंभीतिंदद-

तीत्यर्थः शुभदाःशुभाश्चेति एष्वेवलग्नादिषुस्थानेषुशुभाः सौम्यग्रहाःसमवस्थिताःशुभदाःशुभफलप्रदाइत्यर्थः ४ ॥

शुभग्रहाःसौम्यनिरीक्षिताश्चविलग्नसप्ताष्ट-
मपंचमस्थाः ॥ त्रिषड्दशायेचनिशाक-
रःस्याच्छुभंभवेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां षट्पंचाशिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

टीका—अधुनारोगार्तस्यशुभाशुभज्ञानमाह शुभेति शुभग्रहाबुधगुरुशुक्राः विलग्नंपृच्छालग्नं सप्तमाष्टमपंचमस्थानानिप्रसिद्धानि एतेषुयथासंभवंशुभग्रहाःसमवस्थितास्तेचनिरीक्षिताः सौम्यैःशुभग्रहैरेवदृष्टाः एतदुक्तंभवति शुभग्रहदृष्टस्थानस्थाःपरस्परंपश्यंतियदा तदाएषयोगोन-केवलंयावन्निशाकरश्चंद्रमास्त्रिषड्दशायेचस्याद्भवेत् तृतीयषष्ठदशमानिप्रसिद्धानि आयमेकादशमेतेषामन्यतमे चंद्रमाभवतितदारोगनिपीडितानांव्याधिगृहीतानांशुभ-

मारोग्यंवदेद्ब्रूयात् अर्थादेवयोगासंभवेसत्यशुभंवदेदिति
योगेसतिशुभंब्रूयात् ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्पं॰शुभा-
शुभाध्यायश्चतुर्थःसमाप्तः ॥ ४ ॥

अथप्रवासचिंताध्यायः ॥

दूरगतस्यागमनंसुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्लग्ना-
त् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिलब्ध्वागमनंगुरुसिता-
भ्याम् ॥ १ ॥ जामित्रेत्वथवापष्ठेग्रहःकेंद्रेऽ
थवाक्पतिः ॥ प्रोपितागमनंविद्यात्रिकोणे
ज्ञसितेपिवा ॥ २ ॥

टीका–अधुनाप्रवासचिंताध्यायोव्याख्यायते तत्रा-
दावेवागमनार्थंयोगमाह दूरगतस्येति सुतस्थानंपंचमंधन-
स्थानंद्वितीयम् सहजस्थानंतृतीयम् एतेपुस्थानेपुलग्नात्ता
त्कालिकात् ग्रहैरादित्यादिभिः सर्वैः समवस्थितैः दूर-
गतस्यविप्रकृष्टस्थितस्यआगमनंसंप्राप्तिंवदेत् सौम्यैर्नष्ट
प्राप्तिमिति सौम्यैःसौम्यैर्ग्रहैः बुधगुरुसिताक्षीणचंद्रैः ते

वस्थानेषुव्यवस्थितैः नष्टस्यापहृतस्यवस्तुनःप्राप्तिंलाभं वदेत् तस्यैवप्रवासोनष्टमासीत् सएववाप्रवासिनष्टोऽदर्शनं गतः तद्दर्शनंभवतीत्यर्थः लघ्वागमनंगुरुसिताभ्यामिति गुरुर्बृहस्पतिःसितःशुक्रः आभ्यामेष्वेवस्थानेषुसमवस्थिताभ्यांलघ्वागमनं लघुनाल्पेनैवकालेनप्रवासिनामागमनंप्रवदेत् ॥ १ ॥ अथ योगान्तरमाह जामित्रइति जामित्रं सप्तमंसप्तमस्थानेअथपष्ठेवापृच्छालग्नाधःसमवस्थितः तथा चतुर्णांकेंद्राणांचमध्यादन्यतमेकेंद्रेवाक्पतिर्भवतितदाप्रोपितस्यप्रवासितस्यागमनंप्राप्तिंविद्याज्जानीयात् त्रिकोणइति त्रिकोणेनवपंचमेज्ञोबुधः सितःशुक्रः बुधेशुक्रे वात्रिकोणयोर्नवमपंचमस्थानयोरेवान्यतमस्थेद्वयोर्वात्रिकोणस्थयोः प्रोपितागमनंविद्यादिति ॥ २ ॥

अष्टमस्थेनिशानाथेकंटकैःपापवर्जितैः ॥
प्रवासीसुखमायातिसौम्यैर्लाभसमन्वितः ॥ ३
पृष्ठोदयेपापनिरीक्षितेवापापास्तृतीयेरिपु-

केंद्रगेवा ॥ सौम्यैरदृष्टावधबंधदाःस्युर्नष्टा-
विनष्टामुषिताश्चवाच्याः ॥ ४ ॥

टीका--अथयोगान्तरमाह अष्टमस्थइति निशानाथश्चंद्रमास्तस्मिन्प्रश्नलग्नादष्टमस्थे अष्टमस्थानंसमवस्थितेकंटकानिकेंद्राणि लग्नचतुर्थसप्तमदशमानितैःपापवर्जितैः प्रवासीपथिकः सुखेनाक्लेशेनायातिआगच्छति सौम्यैःशुभग्रहैःकेंद्रस्थैः प्रवासीलाभसमन्वितःलाभयुतः सुखमायाति ॥ ३ ॥ अन्ययोगांतरमाह पृष्ठोदयइति पृष्ठोदयाःमेषकर्कटधन्विमकरमीनाः पृष्ठोदयेपृच्छालग्ने एतेषामन्यतमे तस्मिंश्चपापनिरीक्षिते अशुभग्रहावलोकिते वाशब्दोत्रचार्थे एवंविधेयोगेप्रवासिनोवधस्ताडनंबंधोबंधनंभवेत् अथवापापाअशुभग्रहाः लग्नात्तृतीयस्थानेस्थिताः सर्वएतेचसौम्यैः शुभग्रहैरदृष्टाअनवलोकितास्तदाप्रवासिनोनष्टास्तस्मात्स्थानादन्यदेशंगताः अथवापापालग्नाद्रिपुस्थानेवागतास्तेचसौम्यैरदृष्टास्तदा प्रवासिनोमुषिताश्चोरैर्वाऽपहृताःस्युर्भवेयुः ४, ५

नांविकल्पार्थः वधबन्धदाःस्युरितिपापानांविशेषणम् ४

ग्रहोविलग्नाद्यतमेगृहेतुतेनाहताद्वादशरा-
शयःस्युः ॥ तावद्दिनान्यागमनस्यविद्या-
न्निवर्तनंवक्रगतैर्ग्रहैस्तु ॥ ८ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचि-
तायांषट्पंचाशिकायांप्रवासचिंता-
यांपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

टीका—अधुनाप्रवासिनामागमनकालज्ञानमाह ग्रहो-
विलग्नादिति विलग्नात्पृच्छालग्नायतमेयावत्संख्येराशौ
यःकश्चिद्ग्रहःस्थितःसचरपष्टगतिस्तिष्ठेत् तेनतत्प्रमाणे-
नद्वादशराशयःआहतागुणिताःकार्याः एतदुक्तंभवति द्वा-
दशसंख्यमंकमास्थाप्यलग्नात्प्रभृतिग्रहांतरराशिसंख्यया
गुणयेत् तत्रयावत्संख्याभवंति तावत्संख्यानिदिनानि
प्रवासिनःआगमनस्यविद्याज्जानीयात् तावद्भिःदिनैः
पृथिकआगच्छतीत्यर्थः निवर्तनंवक्रगतैरिति अथसग्र-

होवक्रगतिः प्रतीपगतिस्तदा तावत्संख्यैर्दिनैःप्रवासिनः प्रवासान्निवर्तनंभवति ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकाविवृतौप्रवासचिंताध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥

अथनष्टप्राप्त्यध्यायः ॥

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेऽपिवा ॥
स्थितंतत्रैवतद्द्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका—अथनष्टप्राप्त्यध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव चौरज्ञानमाह स्थिरोदयइति स्थिरावृषसिंहवृश्चिककुंभाःएपामन्यतमस्योदयेतत्काललग्नतांप्राप्ते अथवायस्य कस्यचिद्राशेरुदयेतत्कालंस्थिरनवांशकेवर्तमाने अथवायस्यकस्यचिद्राशेर्वर्गोत्तमनवांशकोदये वर्गोत्तमनवांशश्चरादिपुप्रथममध्यमपर्यंतगाः इतिवर्गोत्तमनवांशकानां लक्षणंप्रोक्तम् एवंलग्नस्यवर्गोत्तमगतेनवांशकेवायदपहृतं द्रव्यंनूनंतत्स्वकीयेनात्मीयेनैवकेनचिच्चोरितमपहृतं

तत्रैवतस्मिन्नेवस्थानेस्थितम् अन्यथाअपरेणापहृतं तस्मात्तत्स्थानाचलितमिति ॥ १ ॥

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥
द्वारदेशेतथामध्येगृहांतेचवदेद्धनम् ॥ २॥
पूर्णःशशीलग्नगतःशुभोवाशीर्षोदयेसौम्य
निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदाशु
लाभोपयातोवलवाञ्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—अधुनास्थानज्ञानमाह आदिमध्येति द्रेष्काणाः प्रथमपंचमनवाधिपानामितिद्रेष्काणलक्षणंप्रागुक्तम् आदिद्रेष्काणःप्रथमः मध्येद्वितीयः अवसानेतृतीयः विलग्नं पृच्छालग्नं विलग्नतःविलग्नात्काललग्नादित्थंभूतेषुद्रेष्काणेषु यथासंख्यंहृतंधनंवित्तं द्वारदेशेतथामध्येगृहांते चधनंस्थितंवदेत् एतदुक्तंभवति लग्नस्यप्रथमद्रेष्काणोदयेहृतंधनंद्वारदेशेस्थितंवदेत् द्वितीयेद्रेष्काणोदयेगृहमध्येब्रह्मस्थानसमीपे तृतीयेद्रेष्काणोदयेगृहांतेवेश्मपश्चिमभागेवदेद्ब्रूयादिति ॥ २ ॥ अधुनालाभालाभज्ञा-

नमाह पूर्णःशशीति पूर्णःपरिपूर्णमंडलःशशीचंद्रः सच लग्नगः पृच्छालग्नेसमवस्थितः अथवाशीर्षोदयेलग्नगते तत्रैवशुभःसौम्यग्रहःसमवस्थितः सचसौम्यैःशुभग्रहैरेव निरीक्षितोदृष्टः भवति तदाआशुक्षिप्रमेवनष्टस्यापहृतस्य धनादेर्लाभंप्राप्तिंकुरुतेविधत्ते लाभइति अथवालग्नाल्लाभे चैकादशेस्थानेशुभःसौम्यग्रहः बलवान्वीर्यवानुपयातः प्राप्तोभवति तथापि चशब्दान्नष्टस्याशुलाभंकुरुते अर्थादेवोक्तयोगानामभावेहृतंनलभ्यतइति ॥ ३ ॥

दिग्वाच्याकेंद्रगतेरसंभवेवावदेद्विलग्नर्क्षात् ॥ मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजनावाच्या॥ ४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायांषट्पंचाशिकायांनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्टःसमाप्तः ॥ ६ ॥

टीका–अधुनादिगध्वनोःप्रमाणमाह दिग्वाच्येति प्राच्यादीशारविसितकुजराहुयमेंदुसौम्यवाक्पतयःइतिग्रहाणांदिशउक्ताः तत्रकेंद्रगतैर्ग्रहैर्दिग्दशावाच्यावक्तव्या

त्कालिकलग्नस्ययःकाश्चिद्ग्रहःकेंद्रेसमवस्थितःतस्ययादि-
क् तस्यांहृतंवित्तंगतंवदेत् तद्यथा सूर्येलग्नचतुर्थसप्तमद
शमानामन्यतमस्थानस्थेपूर्वस्यामेव आग्नेय्यांशुक्रे भौमे
दक्षिणस्यां राहौनैर्ऋत्यां सौरौपश्चिमायां बुधेउत्तरस्यां
जीवेईशान्यामिति द्वयोर्बहुपुवाकेंद्रगतेष्वधिकवलादसं-
भवेवावदेद्विलग्नर्क्षात् अजवृषमिथुनकुलीराःपंचमनवमैः
सहेंद्राद्याइतिराशीनांदिशाउक्ताः असत्यविद्यमानेकेंद्रेग्रहे
विलग्नर्क्षात्विलग्नराशितोदिशंवदेद्ब्रूयादिति तद्यथामेषसिं
हधनुःपुलग्नेपुहृतंवित्तंपूर्वस्यांदिशिगतम् एवंवृषकन्यामक
रेपु दक्षिणस्यांमिथुनतुलाकुंभेपु पश्चिमायांवृश्चिककर्कट-
मीनेपूत्तरस्यांमध्याच्च्युतैश्चलितैरिति विलग्नंप्रश्नलग्नंतस्य
नवांशकानवभागास्तैर्मध्यात्पंचमनवमांशकाच्च्युतैश्चलि
तैर्योजनावाच्या एतदुक्तंभवति-प्रश्नलग्नेप्रथमनवांशका-
त्प्रभृतिपंचमनवांशकंयावद्वर्ततेतावद्धृतंवित्तंतस्मिन्नेवदेशे
प्रागुक्तायांदिशिगतंवदेत् पंचमादंशकाद्यावंतः परतो-

शकाःअतीतास्तावंतियोजनानितद्दिवंप्रागुक्तायांदिशि गतमिति ॥ ४ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकाविवृतौनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ मिश्रकाध्यायः ॥

विषमस्थितेऽर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांऽगनायाश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतोऽन्यथावामम् ॥ १ ॥

टीका—अथमिश्रकाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव गर्भिणीपुत्रदुहितृजन्मज्ञानंवरस्यकन्यालाभज्ञानंचाह विषमस्थितेइति अर्कपुत्रेशनैश्चरेप्रश्नलग्नाद्विषमस्थानस्थिते तृतीयपंचमसप्तमनवमैकादशानिविषमस्थानानि एषामन्यतमस्थानस्थेप्रष्टुःसुतस्यजन्मप्रादुर्भावंवदेत् नन्वत्रलग्नस्यकथंविषमस्थानस्यगणनाक्रियते उच्यते अत्राचार्यो वराहमिहिरोज्ञापकः तथाच विहायलग्नंविषमर्क्षसंस्थः सौरोपिपुंजन्मकरोविलग्नात्।अन्यथांगनायास्तु अन्य-

थाअन्यप्रकारेणस्थितेकेपुत्रेलग्नादंगनायाःस्त्रियाःजन्मवदेत् तेनद्वितीयचतुर्थपष्ठाष्टमदशमद्वादशानामन्यतमे स्थानस्थितेसौरे वरस्यनारीकन्यालभ्येतिवदेत्समस्थिते लग्नाद्विषमस्थानस्थेवामंविपरीतं नलभ्यतइत्यर्थः॥ १॥

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशी लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणकेंद्रेषुवासौम्याः ॥ २ ॥ चन्द्रार्कयोःसप्तमगौसितार्कीसुखेष्टमेवापितथाविलग्नात् ॥ द्वितीयदुश्चिक्यगतौतथाचवर्षासुवृष्टिंप्रवदेन्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका-अधुनाविवाहज्ञानमाह गुरुरविसौम्यैरिति गुरुर्जीवोरविःसूर्यः सौम्योबुधः एतैर्दृष्टोअवलोकितः कीदृशः त्रिसुतमदायारिगः त्रिशब्देनतृतीयस्थानं सुतस्थानंपंचमंमदस्थानंसप्तममायएकादशमरिस्थानंपष्ठं लग्नादित्येपांस्थानानामन्यतमस्थानेगतः समवस्थितःशशीचन्द्रोगुरुरविसौम्यैर्दृष्टोयदिभवतितदामङ्कः विवाह-

स्यपाणिग्रहणस्यकर्ताविधाताभवति त्रिकोणकेंद्रेष्विति अथवासौम्याः शुभग्रहाः त्रिकोणकेंद्रेषुनवपञ्चमलग्नचतुर्थसप्तमदशमेषुयथासंभवंभवंति तदाप्रष्टुःविवाहो भवतीत्यर्थः वाशब्दोऽन्ययोगव्यवच्छेदकार्थः ॥ २ ॥ अधुनावर्षासमयेवृष्टिज्ञानमाह चन्द्रार्कयोरिति चन्द्रः शशी अर्कःआदित्यः अनयोःसप्तमगौसितार्कीशुक्रशनी यथासंभवंयदिभवतः अथवाविलग्नादेवतेनैवप्रकारेणतावेवसितार्कीद्वितीयस्थानेदुश्चिक्येवाभवतस्तयोर्वास्थानयोस्तदावर्षासुवृष्टिर्वर्षणंवदेत् ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसितेपक्षे ॥ चन्द्रेवाप्युदयगतेजलराशिस्थे वदेद्वर्षम् ॥ ४ पुंवर्गेलग्नगतेपुंग्रहदृष्टेबलान्वितेपुरुषः ॥ युग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेस्त्रीवुधयुक्ते तुगर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—अधुनाप्रष्टुःप्रश्नकालेवृष्टिज्ञानमाह सौम्याइति कर्कमीनमकरकुंभाःजलराशयः सौम्याःशुभग्रहाः

जलराशिपुस्थिताः सितेपक्षेशुक्लेमासार्द्धे पुनरयंविशेषः तृतीयधनकेन्द्रगा यदिभवंति तृतीयद्वितीयलग्नचतुर्थ सप्तमदशमानि एतेपुयथासंभवंगताः वाशब्दोन्ययोगापेक्षायाम् अथवाउदयगतेचंद्रेतत्रजलराशिस्थेपृच्छायां चवर्षासुवृष्टिंप्रवदेत् ॥ ४ ॥ अथगर्भिणीनांकिंजायत-इत्येतज्ज्ञानमाह पुंवर्गेति पुंस्त्रीक्रूराविति राशीनांपुंस्त्री संज्ञाजातकेउक्ताः मेषमिथुनसिंहतुलाधन्विकुंभाःपुंराशयः वर्गलक्षणंप्रागुक्तम् पुंवर्गेपुरुषराशिवर्गे लग्नगतेतात्काललग्नतांप्राप्ते तस्मिन्पुंग्रहदृष्टेनरग्रहावलोकिते क्लीबपतीबुधसौरौचंद्रसितौयोषितांनृणांशेषाइतिग्रहाणांपुंस्त्रीनपुंसकत्वमभिहितं तेनपुंग्रहारविभौमजीवाः एतेषामन्यतमेनलग्नगतेदृष्टेतस्मिंश्चतथाभूतेलग्नेबलान्वितेवीर्ययुक्तेचपुरुषोजायते अधिपयुतोदृष्टोवाबुधजीवनिरीक्षितश्चयोराशिःसभवतिबलवान् यदादृष्टोपिवाशेषैरितिलग्नबलमुक्तंयुग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेइति युग्मेयुग्मराशौस्त्रीसंज्ञकेवृषादौगतेस्त्रीग्रहौचंद्रसितौताभ्यामन्यतमेनावलोकितेबलयु-

क्तेचस्त्रीकन्याजायते सामान्यप्रश्नलग्ने बुधयुक्तेबुधेनसंयु-
क्तेस्त्रीगर्भयुतासगर्भावर्तते अथापिनप्रसूयतइत्यर्थः ॥ ५ ॥

कुमारिकांबालशशीबुधश्चवृद्धांशनिःसूर्य-
गुरूप्रसूताम् ॥ स्त्रींकर्कशांभौमसितौविध-
त्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ६ ॥

टीका—अथप्रष्टुःकीदृशीस्त्रीपुरुषोवाचेतसिवर्ततइत्ये-
तत्परिज्ञानमाह कुमारिकामिति शुक्लप्रतिपत्प्रभृतिदश-
म्यंतंयावच्छशीबालः एकादशीप्रभृति कृष्णपंचमीया-
वत्तुवाषष्ठचाथमावास्यांतंयावद्वृद्धः तत्रपृच्छालग्नंय-
दिसबालशशीबालचंद्रःपश्यतिलग्नेवातथाभूतःस्थितःत-
दाप्रष्ठःकुमारिकांवदेत् एवमेवबुधःपश्यति तत्रावस्थि-
तस्तथापिकुमारिकामर्थादेवयौवनस्थेचंद्रेयौवनोपेतांवृ-
द्धेवृद्धामिति केचिद्बालांकुमारींचशशीबुधश्चेतिपठं-
ति शशीबालांकरोति आपुष्पंयावत् पुष्पदर्शनंयाव-
दित्यर्थः बालांस्त्रियं बुधः कुमारिकामनूढांकरोतिएवं
शनिःसौरोविगतयौवनांजराभिभूतांकरोतिसूर्योऽर्क

बृहस्पतिः एतौप्रसूतांप्रसवयुतांस्त्रियंविधत्तःकुरुतः भौमों ऽगारकः सितःशुक्रः एतौकर्कशामतिदारुणांस्त्रियंकुरुतः एवमनेनप्रकारेणवयःशरीरावस्थास्याद्भवेत् पुरुषेपुचैवमितिपुरुषेष्वपिपृच्छासमयेप्रष्टुःवयोज्ञानमेवमनेनप्रकारेणवदेत् ॥ ६ ॥

आत्मसमंलग्नगतैर्भ्राताासहजस्थितैःसुतःसुतगैः ॥ मातावाभगिनीवाचतुर्थगैःशत्रुगैः शत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्माश्रितोगुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिमित्रशत्रुषु तथैववाच्यंबलयुतेषु ॥ ८ ॥

टीका–अथपृच्छांपृच्छति कस्यसंबंधिनीचिंतामेमनसिवर्ततेइत्येतत्परिज्ञानमाहश्लोकद्वयेन आत्मसममितिग्रहैरादित्यादिभिःसबलैर्लग्नगतैर्लग्नस्थैः प्रष्टुः आत्मसमंस्वशरीरतुल्यःकश्चिन्मनसिवर्ततइति तत्कार्यंवक्तव्यमित्येवंलग्नात्सहजस्थितैस्तृतीयगैःभ्राता सुतगैःपंचमस्थानस्थैः सुतःपुत्रः चतुर्थगैश्चतुर्थस्थानस्थैर्माताजननीभगिनीचे-

तिवाच्यम् शत्रुगैःषष्ठस्थानस्थैःरिपुचिंता ॥७॥ भार्येति लग्नात्सप्तमस्थानाश्रितैःसबलैर्ग्रहैःपत्नीवाच्या नवमेनवमस्थानस्थैर्धर्माश्रितोधर्मयुक्तइतिचिंतावाच्या दशमेगुरुराचार्यइति स्वांशपतिरित्यादि स्वश्चासावंशश्चस्वांश आत्मीयोनवभागस्तस्यपतिःस्वामीपृच्छालग्नेतत्कालंयोनवांशकउदितः तत्पतिर्यदालग्नस्थोभवति तदाप्रष्टुः आत्मचिंतेतिवाच्यम् अथस्वांशपतिमित्रंतत्काललग्नेस्थितं तदामित्रंचिंतितमितिवाच्यम् अथस्वांशपतिशत्रुःरिपुस्तत्काललग्नेस्थितस्तदाशत्रुचिंतागतेतिवाच्यम् अथनिर्दिष्टस्थानेषुद्वौग्रहौबहवोवाभवंति तदातेषांमध्यायो बलयुतःसयत्रस्थितःतंप्रष्टुःचित्तेगतंस्थितमितिवाच्यम् तथैवतेनैवप्रकारेणयथाभिहितेषु बलयुक्तेषु वीर्यवत्सुमध्यात्कार्यंवाच्यम् शत्रूमंदसितौसमश्चशशिजोमित्राणिशेषारवेरित्यादिनाग्रंथेचजातकेमित्रशत्रुविभागःप्रदर्शितइति ॥ ८ ॥

चरलग्नेचरभागेमध्याद्भ्रष्टेप्रवासचिंतास्यात् ॥ भ्रष्टःसप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिनव

क्री ॥ ९ ॥ अस्तेरविसितवक्रैःपरजायां स्वांगुरौबुधेवेश्याम् ॥ चंद्रेचवयःशशिव त्प्रवदेत्सौरेऽत्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टीका—अधुनाप्रवासचिंताज्ञानमाह चरलग्नेइति चराणांमेषकर्कटतुलामकराणामन्यतमेलग्नेतत्रतत्का-लम् चरभागे चरनवांशकेउदितस्तस्मिंश्चरलग्नेमध्यात्पं चमनवांशकात्भ्रष्टेच्युते षष्ठादिकमंशंतत्रवर्ततइत्यर्थ प्रष्टुःप्रवासचिंतास्याद्भवेत् प्रवासनिमित्तंचिताभवेदित्य-र्थः अत्रैवनिश्चयमाह भ्रष्टइति सप्तमभवनंपृच्छालग्नात्स-प्तमोराशिस्तस्मात् तत्कालंयदिकश्चिद्ग्रहोभ्रष्टःप्रच्युतः चलितःसचभौमादिकस्तदाप्रवासीपुनर्निवृत्तोनिवर्ततइ-त्यर्थः प्रवासचिंतातेनकिंतुनयास्यति यदिनवक्रीति यो-सौसप्तमभवनाद्भ्रष्टग्रहः सयदिवक्रीप्रतीपगतिर्नभवति त-दानिवृत्तएववाच्यः अथवक्रीतदावृत्तोयास्यतीतिवाच्य-म् ॥ ९ ॥ अथकीदृश्यास्त्रियासहमेसंयोगआसीदित्येतज्ज्ञा-नमाह अस्तेरविसितवक्रैरिति रविरादित्यःसितःशुक्रःव-

क्रोंगारकः एतेषामन्यतमेपृच्छालग्नादस्तेसप्तमेस्थानेष-रजायांपरपत्नीं परभार्ययासहसंयोगआसीत् एवंगुरौजी-वेस्थितेस्वामात्मीयांस्त्रियमितिप्रवदेत् बुधेवेश्यांसाधार-णस्त्रियंचंद्रेचैवंसाधारणस्त्रियमेववदेत् तथातेनैवप्रकारेण-सौरेशनैश्चरेसप्तमेंत्यजातीनांनिकृष्टजातीनांस्त्रियमगम्या-मितिप्रवदेत् वयःशशिवदिति तासांसर्वासांस्त्रीणांशशि-वचंद्रवद्वयःशरीरावस्थांप्रवदेदिति बालचंद्रेबालांयौवनो-पेतांवृद्धेवृद्धांचंद्रप्रविभागःप्रागेवदर्शितइति ॥ १० ॥

मंदःपापसमेतोलग्नान्नवमेशुभैरयुतदृष्टः ॥
रोगार्तःपरदेशेचाष्टमगोमृत्युकरएव॥११॥
सौम्ययुतोऽर्कःसौम्यैःसंदृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थ-
श्च ॥ तस्मादेशादन्यंगतःसवाच्यःपिता
तस्य ॥ १२ ॥

टीका—अथरोगार्तस्यपरदेशस्थितिज्ञानमाह मं-दइति मंदःसौरःसचपापसमेतोरविभौमक्षीणचंद्राणा-मन्यतमेनयुक्तस्तथाभूतो लग्नात्पृच्छालग्नान्नवमे स्थाने

स्थितस्तत्रचशुभैरयुतदृष्टः तत्रचशुभग्रहाणामन्यतमेनयु क्तोनाप्यवलोकितस्तदारोगार्तःरोगोज्वरादिस्तेनार्तःपी- डितः परदेशेऽन्यस्मिन्ग्रामादौस्थितःतथाऽनेनैवलक्षणे नयुक्तःसोरोलग्नादष्टमेस्थानेगतःसमवस्थितस्तदातस्यै- वरोगार्तस्यमरणंकरोति ॥ ११ ॥ अथकश्चित्पृच्छति मदीयःपितान्यदेशस्थस्तत्रकिमयापितिष्ठति अथवाऽ न्यदेशंगतइतिएतज्ज्ञानमाह सौम्येति अर्कःसूर्यः सौम्यैः शुभग्रहैर्युतःसहितस्तेषामन्यतमेनचदृष्टोवलोकितोभवति तथाभूतोलग्नाचाष्टमर्क्षसंस्थितस्तत्संस्थोष्टमस्थानमुपग तोभवति तस्माद्देशाद्ग्रामादिकादन्यंदेशांतरंगतः तस्य प्रष्टुः पिताजनकः प्राप्तइतिवाच्यः अन्यथातत्रैव स्थितः ॥ १२ ॥

अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यंद्रेष्काणैस्तस्कराःस्मृ ताः ॥ राशिभ्यःकालदिग्देशावयोज्ञातिश्च लग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशो- विरचितापट्पंचाशिका समाप्ता ॥

टीका— अधुनाहृतस्यार्थस्यस्वरूपंतस्करकालदिदेशानांज्ञानंतस्करस्यवयोरूपज्ञानंचाह अंशकादिति अंशकाद्धग्नस्यतात्कालिकस्यनवमभागाद्द्रव्यमपहृतंधातुमूलजीवाख्यंतज्ज्ञायते एतत्पूर्वमेवव्याख्यातम् स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणइति तस्यचराशितुल्योवर्णोवक्तव्यः तथाचलघुजातकेप्रोक्तम् अरुणसितहरितपाटलपांडुविचित्रासितेतरपिशंगाः पिंगलकर्बुरबभ्रुकमलिनारुचयोयथासंख्यमिति तस्यचदीर्घमध्यह्रस्वत्वंनवांशकवशाज्ज्ञेयम् तेनचकुंभमीनमेषवृषाह्रस्वाः मिथुनकर्कटधन्विमकरामध्याः सिंहवृश्चिककन्यातुलादीर्घास्तथाचास्मदीयेप्रश्नज्ञाने मेषवृषकुंभमीनाह्रस्वायुगकर्किचापधरमकराः मध्याहरियुवतितुलादयः स्मृतादीर्घाइतिह्रस्वंपरिवर्तुलंमध्यमायतंदीर्घम् अंशकपतौसबलेतःआसारमल्पबलेसुखीनीचस्थितेस्तमितेवापिनष्टप्रायमेव एवमंशकाद्द्रव्यंज्ञायते द्रेष्काणेर्लग्नत्रिभागैस्तस्कराश्चोराः स्मृताउक्ताः यादृशीद्रेष्काणस्याकृतिस्तादृशीएवतस्क-

रस्यवक्तव्या तद्यथा मेषप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषःपरशुहस्तः कृष्णोरक्तनेत्रःरौद्रः द्वितीये द्रेष्काणेस्त्रीलोहितांबरास्थूलोदरीदीर्घमुखैकपादा तृतीयेद्रेष्काणेपुमान् क्रूरःकपिलोरक्ताम्बरःदंडहस्तः वृषस्यप्रथमद्रेष्काणेस्त्रीकुंचितलूनकेशास्थूलोदरीदीर्घपादा द्वितीयेनरःकलावित्लांगलशस्त्रकर्मणिकुशलः तृतीयेनरोबृहत्कायः मिथुनस्य प्रथमद्रेष्काणेस्त्रीरूपान्विताहीनप्रजा द्वितीयेपुरुषः उद्यानसंस्थितः अपत्यरहितःकवचीधनुष्मान् तृतीयेपुमान् रत्नभूषितःपंडितोधनुष्मान् कर्कटप्रथमेपुरुषः हस्तिसदृशशरीरः सूकरमुखः द्वितीयेस्त्रीयौवनापेताकर्कशाअरण्यस्था तृतीयेपुरुषः सर्पवेष्टितः नौस्थःसुवर्णाभरणान्वितःसिंहप्रथमेशाल्मलीसंस्थोगृध्रजन्तुशुकाननः द्वितीयेपुरुषोधनुष्मान् नताग्रनासः तृतीयेनरःकूर्चीकुंचितकेशः दंडहस्तः कन्याप्रथमे स्त्रीपुष्पयुता पूर्णनघटेनोपलक्षिता दग्धांबरा गुरुकुलंवांछति द्वितीयेपुरुषोगृहीतलेखनिः श्यामोविस्तीर्णकार्मुकः तृतीयेस्त्रीगौराकुंभकुचा घटहस्ता

देवालयेप्रवृत्ता तुलाप्रथमेपुरुषःतुलाहस्तः वीथ्यापणगतः
उन्नतहस्तःभांडंचिंतयति द्वितीयेपुरुषः कलशधरोगृध्र-
मुखोक्षुधितस्तृषितश्च तृतीयेपुरुषःदीर्घमुखोधनुष्पाणिः
वृश्चिकप्रथमेस्त्रीनग्नास्थानच्युतासर्पनिबद्धपादामनोरमा
द्वितीयेभर्तृकृतेभुजंगावृतशरीरस्थानसुखान्यमभिवांछ-
ति तृतीयेपुरुषश्चिपिटवक्त्रःधनुःप्रथमेपुरुषोधनुष्मान् द्वि-
तीयेस्त्रीसुरूपागौरवर्णा तृतीयेपुरुषोदंडहस्तःकूर्ची मकर-
प्रथमेपुरुषोरोमशःस्थूलदन्तोबंधभृत्रौद्रवदनोद्वितीयेस्त्री
श्यामाऽलंकारान्विता तृतीयेपुरुषः दीर्घमुखोधनुष्मान्
कुंभप्रथमेपुरुषःगृध्रतुल्यमुखःसकंबलःद्वितीयेस्त्रीरक्ताम्ब-
रा तृतीयेपुरुषःश्यामः मीनप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषोनौस्थः
द्वितीयेस्त्रीगौरानौस्था तृतीयेद्रेष्काणेपुरुषःनग्नःमांससर्प-
वेष्टितांगःएतद्बृहज्जातकेवराहमिहिरेणप्रोक्तम् एवंद्रेष्काणे
तस्कराउक्ताइति राशिभ्यउक्ताइति राशिभ्यःकालदि-
ग्देशाः इति राशीनांकालविभागः मेषाद्याश्चत्वारःसध-
न्विमकराःक्षपाबलाज्ञेयाइति जातकेउक्तम् तेनमेषवृष-

मिथुनकर्कटधन्विमकराणामन्यतमेलग्नेसंस्थेरात्रावपहृतम् सिंहकन्यातुलावृश्चिककुंभमीनानामन्यतमेदिवालग्नेस्थितेदिवागतमिति एवंकालदिङ्मेषसिंहधनुषिपूर्वस्यां गतम् वृषकन्यामकरेर्देक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुंभैःपश्चिमायां कर्कटवृश्चिकमीनैरुत्तरस्यांदिशिगतमिति अथमेषलग्नेपृच्छाकालेस्थितेमेषेचरेभूमौवृषेतुलादौमिथुनेगीतनृत्यस्थानेसंग्रामभूमौवा कर्कटेजलसमीपे सिंहेअरण्यभूमौ कन्यायांनौसमीपेतुलायामापणगृहेवृश्चिकेबिलेश्वभ्रे धनुषिसंग्रामेचप्राकारभूमौमकरेजलसमीपे कुंभेशिल्पगृहे भांडोपस्करसमीपे मीनेजलसमीपइति खचराश्वसर्वेइति-बृहज्जातकेप्रोक्तम् वयोजातिश्चलग्नपादिति लग्नपाव् लग्नेशाव् चोरस्यवयःप्रमाणंजातिंचवदेत् तथाचसंहितायाम् वयांसितेषांस्तनपानबाल्यव्रतस्थितायौवनमध्यवृद्धाः अतीववृद्धारविचंद्रभौमज्ञशुक्रवाग्मीनशनैश्वराणा मिति एवंचंद्रेलग्नपतौ[illegible] मेतुचतुर्थवर्षाधिकः बुधे ब्रह्मचारीदाद[illegible]

ध्यवयःखपंचाब्दःसूर्येसप्तत्यब्दःवृद्धःसौरेतीववृद्धःअशी-
त्यब्दः जातिः ब्राह्मणादिः जीवसितौविप्राणांक्षत्रस्यारो
ष्णगूविशांचंद्रः शूद्राधिपःशशिसुतःशनैश्वरःसंकरभवा-
नामिति ॥ १२ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्पंचाशिकावि-
वृतौमिश्रकाध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना–मुंबई.

जाहिरात.

जाहिरात.

नाम.	रु० आ०
तिषकी लावणी	०--१
नवसन्तराज भाषाटीकासहित इसमें नाप्रकारके शकुन वर्णित हैं ऐसा पूर्ण कुनका ग्रन्थ और नहीं छपा है ...	३--०
पोतभाषाटीका	०--५
ंद्रिका मूल ४ आने और भाषाटीका	०--१०
ंदसारिणी उदाहरणसहित	०--८
कुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)	१--०
ायोनिधि	०--२
ोध (ज्योतिष)	०--१२
ांतदैवज्ञविनोद ज्योतिष भाषा--जिसमें गोल और खगोल विद्या सूर्यसिद्धांतका ाहरण और पंचांग बनानेकी पद्धति आ- महर्घ्य समर्घ्य चमत्कारी योगों सहित और धर्मशास्त्रसहित	२--०